150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक: 03 (वर्ष: 2019-20)

हिन्दी गौरव

(क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चंडीगढ़ की राजभाषा पत्रिका)

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चंडीगढ़

(विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)

विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी, 2019) के अवसर पर सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री शिवास कविराज, क्षे.पा.अ., चंडीगढ़ एवं श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क.हि.अ., चंडीगढ़

राजभाषा पत्रिका 'हिंदी गौरव' के द्वितीय अंक के विमोचन के अवसर पर मुख्य अतिथि डा. आर. सी. मिश्रा (भा.पु.से.), अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, अंबाला रेंज, हरियाणा; श्री शिवास कविराज (भा.पु.से.), क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़; श्री अमित कुमार रावत, उप पारपत्र अधिकारी एवं अन्य

हिन्दी गौरव

(क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चंडीगढ़ की राजभाषा पत्रिका)

अंक: 03 (वर्ष : 2019-20)

मुख्य संरक्षक

श्री शिवास कविराज, (आ.पु.से.)

क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

संरक्षक

श्री अमित कुमार रावत

उप पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

सह-संरक्षक

श्री सहदेव कौशिक

अधीक्षक (प्रशा.)

संपादक

श्री कृष्णा जी पाण्डेय

क. हिंदी अनुवादक

पत्र व्यवहार का पता:-

संपादक, हिन्दी गौरव

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय

(विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)

एस.सी.ओ. 28-32, सेक्टर 34-ए, चंडीगढ़-160022

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अथवा दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। इससे संपादक अथवा कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सीमित एवं निःशुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका/विषय सूची

1.	शुभ संदेश : माननीय विदेश राज्य मंत्री	(i)
2.	संदेश : अपर सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)	(ii)
3.	संदेश : अध्यक्ष, नराकास (का.-1), चंडीगढ़ एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, उ.प. क्षेत्र	(iii)
4.	शुभकामना संदेश : संयुक्त सचिव (पी.एस.पी.) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी	(iv)
5.	शुभकामना संदेश : संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)	(v)
6.	संदेश : क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़	(vi)
7.	संरक्षक की कलम से	(vii)
8.	सह-संरक्षक की कलम से	(viii)
9.	संपादकीय	(ix)
10.	क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ : शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़	(1)
11.	पासपोर्ट मेले का आयोजन	(2)
12.	वैश्विक फलक पर उभरती हिंदी : अमित कुमार रावत, उप पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़	(3)
13.	समाचार पत्रों में कार्यालय से संबंधित गतिविधियां	(4)
14.	क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को प्रथम पुरस्कार : रिपोर्ट	(5)
15.	बारिश : जगजीत सिंह, वरिष्ठ अधीक्षक	(6)
16.	बेटी बना लो: कुमारी साधना शुक्ला, अधीक्षक	(6)
17.	हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन : रिपोर्ट	(7)
18.	प्रधान डाकघर, मलेरकोटला (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन : रिपोर्ट	(7)
19.	एकजुटता : सहदेव कौशिक, अधीक्षक (प्रशा.)	(8)
20.	माँ की ममता (लघुकथा) : प्रफुल चंद्र साह, सहायक अधीक्षक	(9)
21.	मेरे व्यक्तिगत जीवन में हिंदी : कैलाश कुमार, सहायक अधीक्षक	(9)
22.	जल : जीवन के लिए उपहार, रेनू यादव, सहायक अधीक्षक	(10)
23.	प्रधान डाकघर, सिरसा (हरियाणा) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन : रिपोर्ट	(11)
24.	बच्चों का कोना	(11)
25.	जल ही जीवन है : स्वरुप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक	(12)
26.	युवाओं के नाम संदेश : रूपलाल, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(13)
27.	क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कार : रिपोर्ट	(14)
28.	साइबर अपराध : विभूति डोगरा, आईटी अभियंता (टीसीएस)	(15)
29.	क्रोध प्रबंधन : वीना, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(16)
30.	उप डाकघर, बस्सी पठाना (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन : रिपोर्ट	(17)
31.	हिंदी : लोगों को जोड़ने वाली भाषा, राम दत्त शर्मा, सहायक अधीक्षक	(18)
32.	स्वास्थ्य ही धन है : शिव कुमार सिंह, कनिष्ठ पारपत्र सहायक	(18)
33.	प्रधान डाकघर, रोपड़ (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन : रिपोर्ट	(19)
34.	करो रोग, रहो निरोग : राजीव खेतरपाल, सहायक अधीक्षक	(20)
35.	स्वच्छ भारत अभियान : राजेन्द्र प्रसाद, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(21)
36.	बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन : सुखदेव कुमार, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(22)
37.	पानी : रोशन सिंह, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(22)
38.	मानवीयता : जयबीर सिंह भंडारी, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(23)
39	मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप : सुनीता, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(24)
40.	अनमोल जीवन : विनीत सैन, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(25)
41.	माता-पिता : सोनिया, डाटा एंट्री ऑपरेटर	(25)
42.	वर्तमान समय में हिंदी : रमेश कुमारी, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(26)
43.	माँ की ममता, जीवन और संगीत : कंचन शर्मा, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(27)
44.	एक कविता माँ के नाम : सोनम तोमर, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(28)
45.	पेड़ लगाएं, जीवन में खुशहाली लाएं। : श्री कर्मवीर सिंह, कनिष्ठ पारपत्र सहायक	(28)
46.	हिंदी कार्यशाला का आयोजन	(29)
47.	राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ	(29)
48.	प्रदूषण : राकेश मेघ, कनिष्ठ पारपत्र सहायक	(30)
49.	फिट रहें, हिट रहें : राकेश कुमार, कनिष्ठ पारपत्र सहायक	(30)
50.	चुटकुले : राकेश कुमार सिंह, वरिष्ठ पारपत्र सहायक एवं साहिल कुमार ठाकुर, वरिष्ठ पारपत्र सहायक	(31)
51.	पाठकों की प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार	(32)
52.	m Passport App जागरुकता प्रशिक्षण सत्र	(33)
53.	टेबल टेनिस की झलकियाँ	(34)
54.	कार्यालय से संबंधित अन्य गतिविधियाँ	(35)
55.	हिंदी गौरव पत्रिका के द्वितीय अंक के विमोचन की झलकियाँ	(36)
56.	चुप्पी (लघुकथा) : श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. हिंदी अनुवादक	(37)

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

सत्यमेव जयते

विदेश राज्य मंत्री एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Parliamentary Affairs
Government of India

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का आभास हो रहा है कि क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चंडीगढ़ की राजभाषा पत्रिका **'हिंदी गौरव'** के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारी राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में हमारे कार्मिकों की भूमिका का दर्पण बनेगी एवं सभी को हिंदी राजभाषा के अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी।

इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चंडीगढ़ के सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा **'हिंदी गौरव'** के तृतीय अंक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ ।

(वी मुरलीधरन)

Office : South Block, New Delhi-110 011. Tel. : 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax : 011-23011425

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
Minister of State for External Affairs,
New Delhi

शुभ संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ कार्यालय की राजभाषा पत्रिका '**हिन्दी गौरव**' के तीसरे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हमारे पासपोर्ट कार्यालयों द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को आम जन मानस तक सरल एवं सुविधाजनक रूप से पहुंचाया जाना आवश्यक है। राजभाषा का प्रयोग इन कार्यों को सहज संचरणीय बनाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि '**हिन्दी गौरव**' के वर्तमान अंक के प्रकाशन सहित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों के दैनिक कार्यों को आम जन मानस के निमित राजभाषा में संपन्न किए जाने से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और वृद्धि तथा विस्तार एवं सवर्धन को बढ़ावा मिलेगा।

मैं, पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के लिए क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ के अधिकरियों एवं कर्मचारियों को अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ।

(दिनेश पटनायक)
अपर सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

सोनाली अरोड़ा
Sonali Arora

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-1)
एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त (उ.प. क्षेत्र), चण्डीगढ़
Chairman, TOLIC & Pr. CCIT (NWR), Chandigarh

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु एक बहुत ही अच्छा कदम है। 'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर आपके कार्यालय को "ख" क्षेत्र की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के निरंतर विकास के साथ-साथ कार्मिकों के विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनने में तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सोनाली अरोड़ा)

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ के द्वारा कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कार्यालय-पत्रिका को अपनी रचनाओं से पुष्पित-पल्लवित कर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने यह सिद्ध किया है कि हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ रहा है।

हिन्दी आम जन मानस को जोड़ने वाली भाषा होने के साथ-साथ भारत की बहुभाषिक संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी करती है। हिन्दी की इसी विशेषता के चलते हिन्दी जन मानस की भाषा होने के साथ-साथ हमारी राजभाषा भी है।

मैं आशा करता हूँ कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ के इस प्रयास से हिन्दी में कार्य करने की भावना को बल मिलेगा तथा संघ की राजभाषा नीति के अनुरूप राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

पत्रिका को अपने शब्द-रंगों से आलोकित करने के लिए कार्यालय के सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकमनाएँ।

अरुण कुमार चटर्जी

(अरुण कुमार चटर्जी)
संयुक्त सचिव (पी.एस.पी.)
एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सजीव बाबु कुरुप
संयुक्त सचिव (आरबीवी, आई एंड टी)
दूरभाष : 011-49015214
फैक्स : 011-49015217
ई-मेल : jshindi@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ अपनी गृह पत्रिका 'हिंदी गौरव' के तृतीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका के पहले दो अंक भी पढ़ने और संकलन योग्य होंगे।

किसी भी पत्रिका के प्रकाशन का प्राथमिक उद्देश्य पाठकों के बीच सूचना और जानकारी पहुंचाना और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियां में सृजनात्मक क्षमता एवं रचनाधर्मिता पैदा करना होता है। यह पत्रिका निःसंदेह कार्यालय के कार्मिकों को मौलिक अभिव्यक्ति प्रदान करेगी। इस प्रकार के कार्यकलापों से कार्यालय के कार्मिकों और पाठकों के मध्य व्यक्तित्व विकास, मौलिक चिंतन और रचनात्मक लेखन को बढ़ावा मिलता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यालय पत्रिका में ज्ञानवर्धक और प्रेरक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जाएगा जिससे सभी संबंधित वर्ग लाभान्वित होंगे। मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ परिवार की सतत प्रगति की कामना करते हुए, पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक बनने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

सजीव बाबु कुरुप

(सजीव बाबु करुप)

शिवास कविराज, (भा.पु.से.)
क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ़

Sibas Kabiraj, (I.P.S.)
Regional Passport Officer, Chandigarh

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

संदेश

मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ की वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन में राजभाषा पत्रिकाओं का निःसन्देह महत्वपूर्ण योगदान होता है।

विदेश मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यालय में राजभाषा में कार्य करना, कराना एवं इसका प्रयोग बढ़ाना मेरी प्राथमिकताओं में शामिल रहा है। इसके परिणाम भी सुखद एवं उत्साहजनक रहे हैं। 'ख' क्षेत्र में स्थित पासपोर्ट कार्यालयों में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए हमारे कार्यालय को विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) के अवसर पर तत्कालीन माननीय विदेश मंत्री द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। पुरस्कार निश्चित तौर पर न केवल हमारा मनोबल बढ़ाते हैं बल्कि किए जा रहे प्रयासों में निरंतरता लाने हेतु भी दृढ-प्रतिज्ञ रहने हेतु प्रेरित करते हैं और इस नाते हमारी जिम्मेदारियाँ और बढ़ जाती हैं।

राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करने के लिए हमने कई प्रयास किए हैं। जिनमें कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन, तिमाही बैठकों की ससमय एवं निरंतर समीक्षा, कार्यालय में लघु पुस्तकालय की स्थापना, आज का शब्द, सामाजिक माध्यमों द्वारा हिंदी के शब्दों का प्रचार-प्रसार, कार्मिकों के लिए हिंदी में कार्य करने के लिए विशेष प्रोत्साहन योजनाएँ, शीर्ष प्रशासनिक बैठकों की भाषा हिंदी, हिंदी में ई-मेल एवं बैठकों की कार्यसूची एवं कार्यवृत हिंदी में तैयार करना आदि जैसे नवप्रयोग भी शामिल हैं।

जब जन साधरण, अन्य कार्यालयों आदि से हिंदी के लिए किए जा रहे हमारे प्रयासों के लिए सराहना मिलती है तो हमें प्रतीत होता है कि हम सही दिशा में प्रयासरत हैं। हमारे समक्ष कई चुनौतियां भी हैं परंतु हम उनका समाधान ढूँढ रहे हैं। हमने पहले भी प्रयास किए है, अब भी कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। मैं आशान्वित हूँ कि हिन्दी के लिए किए जा रहे प्रयास औरों के लिए प्रेरणादायक बने।

और अंत में, इसी आशा और विश्वास के साथ, मैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से अपना योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बधाई देता हूँ।

"जय हिंद"

शिवास

(शिवास कविराज)

अमित कुमार रावत
उप पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ़
Amit Kumar Rawat
Dy. Passport Officer, Chandigarh

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तृतीय अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस वर्ष के श्रावण ने अपना चादर समेट लिया है। इस चादर से छिटक कर कुछ बीज धरती की गोद में अंकुरित होकर पौध बनने लगे हैं। इन छोटे-पौधें को धरती ने अपने आँचल में स्थान दिया है। आने वाले कल को इनमें से कुछ पौधे पेड़ बनकर इस धरा को हरियाली देंगे, शीतलता देंगे।

परिवर्तन संसार का नियम है, प्रकृति का नियम है और इस परिवर्तन से मनुष्य प्रभावित न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। हमारे कार्यालय में भी राजभाषा को लेकर परिवर्तन की हवा चली है, यह बदलाव लाने में कहाँ तक सफल हुई है इसका आंकलन आप करें तो बेहतर होगा। हाँ, हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि हम प्रयासरत हैं, पूरी सत्यनिष्ठा से, आगे भी रहेंगे।

'हिंदी है जन-जन की भाषा' यह केवल एक सूत्रवाक्य नहीं है। इसमें जो भाव छुपा है, आज वही वैश्विक स्तर पर उभरती हिंदी के सपनों को निखार रहा है, उसे पंख लगा उड़ना सिखा रहा है। मौसम बदल रहा है, हिंदी की हवा आ रही है; उसे आने दीजिए, महसूस कीजिए। जीना इसी का नाम है।

पत्रिका के पिछले अंकों पर सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया/सुझाव/विचार आदि ने हमें और बेहतर, और अच्छा करने हेतु प्रोत्साहित किया है। आप अपना स्नेह यूँ ही बरसाते रहें, हमें बताते रहें। हम चलते रहेंगे, सीखते रहेंगे, जनसाधारण की उम्मीदों पर खरा उतरते रहेंगे। चरैवेति, चरैवेति!

मैं पत्रिका के संपादक एवं इसके प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों/व्यक्तियों को बधाई और भावी पाठकगण को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

"जय हिंद"

(अमित कुमार रावत)

सहदेव कौशिक
अधीक्षक
Sahdev Kaushik
Supdt.

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

सह-संरक्षक की कलम से

मुझे अत्यंत हर्ष है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तीसरे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हमारे देश की संस्कृति एवं अस्मिता की पहचान में हमारी भाषाओं का विशेष महत्व है। भारत सांस्कृतिक एवं धर्मिक विविधताओं से भरा देश है। यहाँ अलग-अलग भाषाओं को मानने वाले लोग हैं। हिंदी केवल हमारी राजभाषा नहीं है, बल्कि यह हमारी पहचान, हमारी संस्कृति से जुड़ी और अपनत्व की भाषा है। हिंदी ने न केवल भारतीय बल्कि विदेशी भाषाओं के भी कई प्रचलित शब्दों को सहर्ष अंगीकार किया है। यही तो कुछेक मुख्य कारण हैं कि हिंदी दुनिया भर में अपनी अलग पहचान बना रही है।

हिंदी को जनसाधरण की भाषा बनाने के लिए हिंदी के प्रबुद्ध जन, हिंदी सेवी एवं हिंदी प्रेमी दशकों से सतत प्रयासरत हैं। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि हिंदी आज विश्व फलक पर अपनी आभा का तेज बिखेर रही है। महर्षि अरविंद जी ने सच ही कहा है कि...

"भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार के द्वारा

एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं।"

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भी भारतभर के पारपत्र कार्यालयों, अन्य कार्यालयों एवं आमजन तक अपनी पहुँच स्थापित कर हिंदी सेवियों के साथ-साथ हिंदी प्रेमियों को जोड़ने का काम करेगी। मैं पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

(सहदेव कौशिक)

श्री कृष्णा जी पाण्डेय
क. हिंदी अनुवादक

संपादकीय

'हिंदी गौरव' के तीसरे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमारे कार्यालय को विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी, 2019) के अवसर पर ख क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कार्यालयों को सरकार की ओर से, विशेषकर राजभाषा में उल्लेखनीय योगदान के लिए, पुरस्कार मिलना गौरव का बोध कराता है।

कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए राजभाषा अनुभाग निरंतर प्रयत्नशील रहा है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन हेतु हमारे प्रयासों की कडियों में हिंदी गौरव पत्रिका का प्रकाशन एक है। इसी कडी में विभिन्न अनुभागों में अधिकांश फॉर्म, मानक मसौदे आदि अंग्रेजी में प्रयोग में आ रहे थे उसे भी हिंदी/द्विभाषी रूप में बनाया गया है।

प्रस्तुत अंक में शामिल रचनाओं को आमूल-चूल परिवर्तन के साथ यथावत रखने का प्रयास किया गया है। पत्रिका में जिन अधिकारियों एवं कार्मिकों की रचनाओं को शामिल किया गया है, वह हिंदी से उनके स्नेह, उनकी निष्ठा एवं रचनाधर्मिता का दर्पण है।

अंत में मैं पत्रिका के प्रकाशन में अपना प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही साथ उन सभी व्यक्तियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर कार्यालय में हिंदी की विभिन्न गतिविधियों, विशेषकर राजभाषा के क्रियान्वयन एवं प्रयोग, में अपना सहज सहयोग प्रदान करते रहते हैं। पत्रिका को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए हमें आपके बहुमूल्य सुझावों की भी प्रतीक्षा रहती है। आपके सुझाव हमें न केवल प्रोत्साहन अपितु और बेहतर करने की प्रेरणा देते हैं। पत्रिका के बारे में आप हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराएं।

"जय हिंद।"

(श्री कृष्णा जी पाण्डेय)

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़

शिवास कविराज, (भा.पु.से.)
क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी,
चंडीगढ़

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी स्थापना के समय से ही नागरिकों को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करता आ रहा है।

वर्तमान में कार्यालय अपने क्षेत्राधिकार में अवस्थित पासपोर्ट सेवा केंद्रों एवं डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों (पीओपीएसके) के माध्यम से नागरिकों को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

कार्यालय के कार्याधिकार क्षेत्र में केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, पंजाब के 11 जिले (एसएएस नगर, फतेहगढ़ साहिब, रोपड़, बठिंडा, संगरूर, बरनाला, पटियाला, मानसा, लुधियाना, खन्ना, जगराँव) एवं हरियाणा के 12 जिले पंचकूला, अंबाला, जींद, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र, पानीपत, भिवानी, यमुनानगर, हिसार, फतेहाबाद और सिरसा आते हैं। इसके अलावा नागरिकों को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ प्रदान करने के लिए लुधियाना, अंबाला, चंडीगढ़-I एवं चंडीगढ़-II में स्थित कुल चार पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीएसके) तथा 12 अन्य जगहों पर डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं। हम समय-समय पर पासपोर्ट मेलों का आयोजन कर आवेदकों को उत्कृष्ट पासपोर्ट सेवाएँ उपलब्ध कराने की हरसंभव कोशिश करते रहे हैं।

विगत वर्षों में हमने जनशिकायतों में कमी लाने, पेंडेंसी शून्य पर लाने, कार्यालय तक लोगों की पहुँच आसान बनाने, नागरिक केंद्रित सेवाओं की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने, पारदर्शी और कुशल पासपोर्ट वितरण प्रणाली और सेवाओं को सुनिश्चित करने एवं पुलिस सत्यापन के लिए औसत समय में कमी लाने हेतु अभूतपूर्व प्रयास किए हैं। हमारे इन प्रयासों के फलस्वरूप आवेदकों को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ पहले की अपेक्षा बेहतर तरीके से एवं तय समय में मिल रही हैं। नागरिकों को ये सेवाएँ ससमय मिलती रहे इसके लिए कार्यालय द्वारा निम्नलिखित प्रयास किए गए हैं:-

सेवाएँ	पहले	अब
सामान्य (नॉर्मल) पासपोर्ट हेतु मुलाकात (अप्वाइंटमेंट) का समय	45 दिन	06 दिन
तत्काल पासपोर्ट	07 दिन	01 दिन
पुलिस अनापत्ति प्रमाणपत्र (पीसीसी)	07 दिन	01 दिन

पहले सामान्य (नॉर्मल) पासपोर्ट हेतु मुलाकात (अप्वाइंटमेंट) का समय 45 दिन होता था जिसे अब कम कर 6 दिन एवं तत्काल पासपोर्ट और पुलिस अनापत्ति प्रमाणपत्र (पीसीसी) हेतु 07 दिन से कम कर 01 दिन पर लाया गया है। अब तत्काल में जारी पासपोर्ट 03 दिनों एवं पुनः जारी (रीइश्यू) पासपोर्ट 05 दिनों के अंदर आवेदकों तक पहुँच रहे हैं। इससे न केवल उनके समय बल्कि संसाधनों की भी अच्छी-खासी बचत हो रही है।

नागरिकों तक ये सेवाएँ ससमय पहुँचाने लिए हमारा कार्यालय सदैव तत्पर रहा है। विदित हो कि गत वर्ष हमारे कार्यालय ने 7 लाख से भी ज्यादा नागरिकों (आवेदकों) को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ प्रदान कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। गत वर्ष इस कार्यालय को कुल 7,33,318 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 7,25,885 आवेदकों को पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाएँ प्रदान की गई। एक साल में पासपोर्ट जारी करने की यह अनूठी उपलब्धि निश्चित तौर पर ऐतिहासिक है जो कि कार्यालय के लिए गौरव की बात है। यह हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही संभव हो पाया है।

कार्यालय द्वारा समय-समय पर पासपोर्ट मेलों का आयोजन कर नागरिकों को ना केवल पासपोर्ट एवं संबंधित सेवाएं प्रदान की गई बल्कि उन्हें mPassport Seva मोबाइल ऐप से 'कहीं से भी पासपोर्ट के लिए आवेदन करें' योजना के बारे में भी जानकारियाँ दी गई। इस वर्ष कार्यालय द्वारा हरियाणा और पंजाब के 05 जिलों (भिवानी, रोपड़, बस्सी पठाना, मलेरकोटला एवं सिरसा) के प्रधान/उप डाकघरों में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) खोले गए। कार्यालय वर्तमान में 04 पासपोर्ट सेवा केंद्रों और 12 डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों (पीओपीएसके) के माध्यम से आवेदकों को पासपोर्ट और इससे संबंधित सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) से वैवाहिक विवाद के पीड़ितों एवं पीड़ितों के परिवारों को न्याय दिलाने के लिए कार्यालय की तरफ से उच्च स्तर पर कार्य किए जा रहे हैं ताकि अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) को जल्द से जल्द भारत वापस बुलाया जा सके। इस दिशा में विदेश मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पूरी निष्ठा के साथ जनहित में पालन किया जा रहा है।

कार्यालय विदेश मंत्रालय द्वारा पासपोर्ट सेवाओं के लिए दी गई उक्ति "पासपोर्ट - सुधार, विस्तार और आप के द्वार" के तहत नागरिकों को पासपोर्ट और इससे संबंधित सेवा देने हेतु सदैव प्रतिबद्ध है तथा भविष्य में अपनी इसी उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा।

★★★★★

पासपोर्ट मेले का आयोजन

जन साधारण की पासपोर्ट एवं इससे संबंधित सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा पासपोर्ट सेवा केंद्र, चंडीगढ़, अंबाला और लुधियाना में दिनांक 16.03.2019 (शनिवार) को पासपोर्ट मेले का आयोजन किया

★★★★★

अगर हमारे देश का स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला है तो नि:संदेह अंग्रेजी ही राजभाषा होगी; लेकिन अगर हमारे देश के करोड़ों भूखों मरने वालों, करोड़ों निरक्षर बहनों और दलित जनों का है, और इन सबके लिए होने वाला है तो हमारे देश में हिंदी ही एक एकमात्र राजभाषा हो सकती है।

महात्मा गांधी

वैश्विक फलक पर उभरती हिंदी

श्री अमित कुमार रावत
उप पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

वैश्विक स्तर पर हिंदी के बढ़ते कदम भारत की अभूतपूर्व उपस्थिति का द्योतक है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि गत वर्षों में वैश्विक स्तर पर हिंदी ने जिस तेजी से अपने पैर पसारे हैं उसके पीछे अन्य भाषा के शब्दों को स्वीकार करने की इसकी सहजता प्रमुख कारण है। इसी सहजता से हिंदी के लिए एक नए जीवन का सूत्रपात हुआ है। पहले की तुलना में हिंदी आज अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर अधिक सशक्त हुई है। हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने हेतु सरकार, कई संगठन, हिंदी सेवी और हिंदी प्रेमी विशेष भूमिका निभाते रहे है। यह प्रयास जारी रहने चाहिए।

"हिंदी बढ़ रही है, कई नए प्रतिमान गढ़ रही है।"

सच कहें तो हिंदी को जिस सहजता से लोगों ने अपनाना शुरू किया है वह अभूतपूर्व है। हाल ही में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जीत पर कई राष्ट्राध्यक्षों ने माननीय प्रधानमंत्री एवं जनता-जनार्दन को सामाजिक माध्यमों (सोशल नेटवर्किंग साइट्स) से देवनागरी लिपि में लिखकर अपनी-अपनी शुभकामनाएँ दी। हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। वस्तुतः मैं इसे महज 'अभिव्यक्ति का माध्यम' की जगह 'जुड़ाव हेतु अभिव्यक्ति' के रूप में देखता हूँ। यह निश्चित तौर पर हिंदी प्रेमियों एवं हिंदी सेवियों को न केवल ऊर्जस्वित अपितु वैश्विक स्तर पर हिंदी के बढ़ते कदम को भी रेखांकित करता है।

अबू धाबी के न्याय विभाग ने हाल में इस बात की पुष्टि की है कि वहाँ अब श्रम से जुड़े मामलों में न्यायालय की कार्यवाहियों के लिए अरबी और अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा को भी शामिल कर लिया गया है।

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी (2019) के अवसर पर विदेश मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में माननीय तत्कालीन विदेश मंत्री ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने हेतु सरकार हेतु किए जा रहे प्रयासों पर संक्षिप्त चर्चा की थी। इस दौरान उन्होंने इन प्रयासों में आने वाली तकनीकी दिक्कतों पर भी संक्षिप्त प्रयास डाला था।

भारत कूटनीति के क्षेत्र में नई ऊर्जा और शक्ति से कार्य करता रहा है। भारत से माननीय राष्ट्रपति / उपराष्ट्रपति / प्रधानमंत्री / मंत्री स्तर एवं प्रतिनिधियों द्वारा अनेक देशों की यात्राएँ की जा रही हैं। कई देशों की यात्राएँ तो पहली बार की जा रही। कई कार्यक्रम भी पहली बार किए गए हैं। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के रिश्तों को हिंदी एक नई ऊर्जा दे रही है। कई देशों के छात्र/छात्राएँ हिंदी की पढ़ाई कर रहे हैं। विदेश के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई हो रही है।

तीसरे भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन में पहली बार अफ्रीका महाद्वीप के सभी 54 देशों के नेताओं को आमंत्रित किया गया और सभी देशों का प्रतिनिधित्व भी हुआ। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा गठबंधन' का गठन किया गया और उसका पहला सम्मेलन भारत में आयोजित किया गया। प्रशांत द्वीप समूह के राष्ट्राध्यक्ष/शासनाध्यक्षों का सम्मेलन दो बार आयोजित किया गया; पहला फिजी

में और दूसरा भारत के जयपुर शहर में। पहली बार भारतीय मूल के सांसदों का सम्मेलन भारत में नई दिल्ली में आयोजित किया गया। यह भारत से प्रागार रूप से जुड़ने एवं जोड़ने की दिशा में सकारात्मक पहल ही तो है।

हाँ, हिन्दी अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए सरकार द्वारा हिंदी के विद्यार्थियों/ शोधार्थियों हेतु और अधिक प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करना होगा। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा से संबंधित खाली पदों को शीघ्रातिशीघ्र भरे जाने की आवश्यकता है। राजभाषा अधिकारियों/ अनुवादकों को समय-समय पर गहन प्रशिक्षण देने हेतु व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाकर उसका ससमय क्रियान्वयन करने पर बल देना चाहिए। राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों/ अनुदेशों/परिपत्रों आदि को सभी मंत्रालयों/विभागों/ अधीनस्थ कार्यालयों/ उपक्रमों आदि में एकसमान रूप से प्रभाव में लाने/लागू करने की आवश्यकता है। राजभाषा कार्मिकों के एकसमान पदनाम एवं वेतन संबंधी मुद्दों के ससमय समाधान हेतु निष्पक्ष प्रयास करने की जरूरत पर बल देना होगा। राजभाषा को तकनीक से जोड़ते हुए भविष्योन्मुखी कार्यक्रमों को बनाने एवं उन्हें सही अर्थों में धरातल पर लागू करने पर जोर देना होगा। कबीरदास जी कहते हैं:-

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आय फल होय।

बस हमारे प्रयास ईमानदार हो, थोड़ा समय लग सकता है। पर वह दिन बहुत दूर नहीं जब हिंदी सही अर्थों में अपना उचित स्थान पाएगी।

★★★★★

समाचार पत्रों में कार्यालय की गतिविधियों की कुछ झलकियां

पासपोर्ट कार्यालय चंडीगढ़ को मिला प्रथम पुरस्कार

हिंदी लेख मुकाबले में 46 ने लिया हिस्सा

हिंदी दिवस पर सम्मान

हिंदी दिवस पर क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शिवास कविराज को दिल्ली में सम्मान मिला। अमर उजाला

विश्व हिंदी दिवस पर पासपोर्ट दफ्तर को मिला पुरस्कार

प्रवासी पतियों से तंग महिलाओं ने बताई दास्तां

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को मिला प्रथम पुरस्कार

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को प्रथम पुरस्कार

पासपोर्ट सेवा दिवस के उपलक्ष्य पर विदेश मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 24-25 जून, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित वार्षिक पासपोर्ट पुरस्कार कार्यक्रम में क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज ने माननीय विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर एवं मंत्रालय के तत्कालीन सचिव (सीपीवी एवं ओआईए), श्री संजीव अरोड़ा से पुरस्कार ग्रहण किया।

कार्यालय को यह पुरस्कार जन शिकायतों में कमी लाने, पैंडेंसी शून्य पर लाने, कार्यालय तक लोगों की आसान पहुँच, नागरिक केंद्रित सेवाओं की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने, पारदर्शी और कुशल पासपोर्ट वितरण प्रणाली और सेवाओं को सुनिश्चित करने एवं पुलिस सत्यापन के लिए औसत समय में कमी लाने हेतु किए गए प्रयासों के लिए प्रदान किया गया।

गत वर्ष इस कार्यालय द्वारा 7 लाख से भी अधिक नागरिकों को पासपोर्ट एवं इससे संबंधी सेवाएँ प्रदान की गई। कार्यालय के कार्मिकों की लगन, कड़ी मेहनत, छुट्टी के दिनों में भी कार्य एवं समय-समय पर कार्यालय के नियत समय से 02-03 घंटे अधिक कार्य करने की बदौलत ही यह संभव हो पाया है। कार्यालय में कार्मिकों की भारी कमी के बावजूद नागरिक-केंद्रित सेवाओं में कोई कमी नहीं आने देने एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ इस पुरस्कार को कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समर्पित करते हुए हर्ष का अनुभव करते हैं।

पासपोर्ट सेवा दिवस (2019) के उपलक्ष्य पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज

★★★★★

केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है, उतने श्रम में हिंदुस्तान की सभी भाषाएं सीखी जा सकती हैं।

आचार्य विनोबा भावे

बारिश

तस्वीर साभार: नीलम कुमारी

कल हम भी बारिश में छपाके लगाया करते थे
आज इसी बारिश में कीटाणु देखना सीख गए।
कल बेफिक्र थे कि माँ क्या कहेगी
आज बारिश में मोबाइल बचाना सीख गए।
कल दुआ करते थे कि बरसे बेहिसाब तो छुट्टी हो जाए
अब डरते हैं कि रुके यह बारिश कहीं आफिस छूट न जाए।
किसने कहा नहीं आती वह बचपन वाली बारिश
हम खुद अब कागज की नाव बनाना भूल गए।
बारिश तो अब भी बारिश है
हम अपना जमाना भू ल गए।।

जगजीत सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

★★★★★

बेटी बना लो

कलाकृति साभार : किरन कुमारी

तस्वीर साभार: श्री स्वरूप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक

मैं नहीं किसी को परेशान करूँगी
सबके तमाच्छन्न जीवनों में आभा भरूँगी
मत मेरे दीपक में ज्वलित तेल डालो
माँ मुझे अपनी बेटी बना लो
न बनाओ रानी, न दो कोई महल
चाहे न दो मुझे दुनिया की चहल-पहल
बस मुझे अपने आँचल में पा लो
माँ मुझे अपनी बेटी बना लो
पेट में आई थी सुनती जुल्मी ये दुनिया सारी
माँ अब तेरी बारी, उठाने को मेरे जीममीदारी
मुझे स्वर्ग और धरती के बीच पलने में न डालो
माँ मुझे अपनी बेटी बना लो

संकलन
कुमारी साधना शुक्ला
अधीक्षक

'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 24.07.2019 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1), चंडीगढ़ के तत्वावधान में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, सेक्टर 34-ए, चंडीगढ़ के सौजन्य से कार्यालय परिसर में 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ ने किया।

इस अवसर पर श्री अमित कुमार रावत, उप-पासपोर्ट अधिकारी तथा नराकास, चंडीगढ़ से श्रीमती नीना मल्होत्रा, सहायक निदेशक एवं सचिव (नराकास-का.-1), श्रीमती रूपा चड्ढा, श्री नवीन, श्री विजेंद्र आदि उपस्थित थे। प्रतियोगिता में चंडीगढ़ में स्थित भारत सरकार के अलग-अलग कार्यालयों/ उपक्रमों के 46 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ ने कहा कि ऐसे आयोजन कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में निःसन्देह मील के पत्थर साबित होते हैं। उन्होंने हिंदी की प्रगति के लिए कार्यालय की ओर से समस्त संभव योगदान देने की भी बात कही। सचिव (नराकास-का.-1) ने प्रतियोगिता के विषय पर जानकारी सहित राजभाषा हिंदी के लिए नराकास की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

★★★★★

प्रधान डाकघर, मलेरकोटला (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन

जन साधारण की पासपोर्ट संबंधी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दिनांक 16.02.2019 को प्रधान डाकघर, मलेरकोटला (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमती रज़िया सुल्ताना (माननीय मंत्री, उच्च शिक्षा, जल आपूर्ति और स्वच्छता, पंजाब) ने श्री भगवंत मान (माननीय सांसद, संगरूर) की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ पंजाब के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री अनिल कुमार एवं क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज भी मौजूद थे।

मलेरकोटला में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों के खुल जाने से क्षेत्र के लोग पासपोर्ट बनवाने के लिए अब लुधियाना, पटियाला अथवा चंडीगढ़ नहीं जाना पड़ेगा। आवेदक अब डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र, मलेरकोटला में ही अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं।

एकजुटता

सहदेव कौशिक
अधीक्षक

अपना आफिस है एक बगीचा
फूल इसमें है रंगीन खिले
अफसर हैं कर्मचारी हैं
सबको अलग-अलग हैं पद मिले।

उमंग रहे तरंग रहे
व्यवहार मिलनसार बना रहे
मिल-जुलकर सब काम करें
परिवार हमारा बना रहे।

आगे-पीछे हैं पद मगर
ऊँच-नीच का भाव नहीं
मतो में भेद हो जाए मगर
मन का ना हो टकराव कभी।

आफिस हो मंदिर एक
आस्था हो कर्म मजहब में
रूठे ना किसी से कभी कोई
अपने किसी मतलब में।

बना रहे हमारा संग सदा
नींव पक्की बनी रहे
कुनीति का अंश न हो
सबकी तरक्की बनी रहे।

जो फूट पड़े विश्वास में तो
बंधन भी सब टूट जाते हैं
जो देख फायदा अपना कुछ
बात-बात पर रूठ जाते हैं।

लालच, मोह, लालसा और
कुनीति के भाव की जगह नहीं
परिवार की नींव ना हिल पाए
आओ रहें हमसब एकजुट सही।

तस्वीर साभार: श्री स्वरूप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक

तस्वीर साभार: नीलम कुमारी

माँ की ममता

(लघुकथा)

प्रफुल चंद्र साह
सहायक अधीक्षक

माँ ने अपने बच्चे को खूब पढ़ा-लिखा कर लायक बना दिया। कुछ समय के बाद बेटे को अच्छी नौकरी मिल गई। बेटे की शादी भी हो गई। कुछ ही दिनों में माँ को लेकर बेटे और बहू में विवाद होने लगा। विवाद का समाधान न होने और समय को देखते हुए अंततः बेटे ने अपनी माँ को वृद्धाश्रम में रखने का निर्णय लिया। माँ खुशी-खुशी वृद्धाश्रम में रहने लगी। हाँ, बेटा बीच-बीच में अपनी माँ का हालचाल जानने आ जाया करता था।

समय बीतता गया, माँ बूढ़ी हो चली। बेटा बहुत दिनों के बाद माँ से मिलने आया और पूछा "माँ, तुम्हें यहाँ कोई दिक्कत तो नहीं?"

माँ लड़खड़ाते हुए बोली 'बेटा! दिक्कत तो कोई नहीं, बस गर्मी बहुत लगती है। मैं सोच रही थी कि यहाँ एक पंखा लगवा देता।"

बेटा बोला "माँ, अब बस कुछ दिनों की तो जिंदगी है। अब पंखा लगवाने से क्या फायदा। माँ का गला अब रूँधने लगा था। उसने जवाब दिया "बेटा, मेरी जिंदगी तो थोड़ी सी है। पर मैं अपने लिए नहीं, मैं तो तुम्हारे लिए सोच रही थी कि कल तुम्हें भी तो अपनी बहू के आ जाने के बाद इसी आश्रम में आना होगा। सुख-सुविधाओं में रहने वाला मेरा बेटा भला इतनी गर्मी कैसे बर्दाश्त कर पाएगा। इसलिए अपने जीते जी अपने बच्चे के लिए व्यवस्था करवा देना चाहती हूँ।"

★★★★★

मेरे व्यक्तिगत जीवन में हिंदी

कैलाश कुमार
सहायक अधीक्षक

मैं मूलतः हिंदी भाषी प्रदेश से आता हूँ। मेरी मातृभाषा हिंदी है, किंतु मेरी कर्मभूमि वैसे प्रदेश रहे हैं जहाँ न केवल अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती रही हैं, अपितु लोकाचार, संस्कृति एवं जीवनशैली भी अलग-अलग है। कर्तव्य तैनाती के दौरान मैंने वहाँ की भाषाओं, संस्कृतियों को सीखने-समझने की भरसक कोशिश की है, परंतु ऐसा कभी नहीं हुआ कि हिंदी में बातचीत करने अथवा अपने विचार रखने के कारण किसी परेशानी का सामना करना पड़ा हो। हाँ, शुरुआत में थोड़ी झिझक एवं लेसमात्र की परेशानियाँ आती थीं, पर ये परेशानियाँ निजी और स्वयं सृजित होती थीं। मैं समझता हूँ कि सीखने-समझने के साथ-साथ जुड़ाव-लगाव अभिव्यक्ति का माध्यम बने तो निश्चित ही ऐसी छोटी-मोटी परेशानियों का हल स्वतः निकल आता है।

★★★★★

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।
माखनलाल चतुर्वेदी

जल : जीवन के लिए उपहार

रेनू यादव
सहायक अधीक्षक

जल है तो कल है। यह तो हम सभी जानते हैं कि जल ही जीवन है, लेकिन यह जानते हुए भी इस बहुमूल्य संसाधन का जबरदस्त नुकसान किया जा रहा है। हम सभी को यह मालूम है कि जल हमारे जीवन के लिए कितना जरूरी है। इसके बावजूद हम पानी की बचत करना भूल जाते हैं। किताबी ज्ञान तो हमारे अंदर बहुत है लेकिन उसको असल जिंदगी में उतारना एवं अपनाना हम अक्सर भूल जाते हैं।

तस्वीर साभार: श्री स्वरूप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक

पृथ्वी पर 71% पानी है। लेकिन पीने योग्य पानी बहुत ही कम मात्रा में है, और उसे भी हम दिन-प्रतिदिन बर्बाद करने में लगे हैं। पानी का महत्व हम सभी को पता है पानी ही प्यास बुझाता है। आदमी खाने के बिना तो रह सकता है, लेकिन पानी के बिना नहीं। पानी ही है जिसने पूरे भूभाग को हरा भरा कर रखा है। पानी है तो पेड़-पौधे हैं, और पेड़ पौधे हैं तो हम हैं। चिंता का विषय यह है कि पानी का स्तर प्रतिवर्ष कम होता जा रहा है। पहाड़ों पर बर्फ पिघल रही है। महासागरों का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है। वर्षा समय पर नहीं हो रही है। पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। धरती का तापमान बढता जा रहा है।

निम्नलिखित बातें हैं जिनपर अमल करके हम धरती को पानी की किल्लत से बचा सकते हैं:-

- **खेतों में फव्वारेदार पद्धति से सिंचाई :** खेत-खलिहानों में फव्वारेदार पद्धति से सिंचाई करें। सीधे पाइप का प्रयोग न करें। इससे जमीन को पानी की जितनी जरूरत होगी, उतना ही पानी मिलेगा, व्यर्थ नहीं जाएगा।
- **वर्षा जल का संचयन :** वर्षा जल को एकत्रित करके पानी को बचाया जा सकता है। इस पानी का प्रयोग दिनचर्या के कार्यों और खेतों आदि में किया जा सकता है।
- **जितनी जरूरत हो उतना ही नल खोलें :** पानी को आवश्यकतानुसार ही उपयोग में लाया जाना चाहिए। जितनी जरूरत हो उतना ही नल खोलें। साथ ही नई पीढ़ी को भी इसका ज्ञान दें, आने वाले समय में पानी का संकट और गहराता जाएगा।
- **कल-कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों का प्रवाह साफ जल में न करें :** कल-कारखानों से निकले हुए दूषित पदार्थ नदियों और पानी के अन्य स्रोतों में मिलकर उसके पानी को दूषित कर रहे हैं, जिस वजह से उस पानी को पीने योग्य नहीं बनाया जा सकता। उसे पीने योग्य बनाने हेतु इतनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है कि उसमें मौजूद सभी प्राकृतिक तत्व नष्ट हो जाते हैं।
- **वाटर ओवर-फ्लो अलार्म का प्रयोग :** घरों की छतों पर लगी टंकियों से गिरता हुआ पानी एक आम दृश्य है। इससे निपटने का एक सीधा व सरल उपाय है कि छत पर लगी हुई टंकियों में वॉटर ओवरफ्लो अलार्म का प्रयोग करें, ताकि पानी की बर्बादी न हो।

जल संकट हमारे देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर संकट बनकर उभरा है। इससे निपटने के लिए सभी को, विशेषकर देश के युवाओं को, आगे आना होगा। अगर ऐसा नहीं किया गया तो शायद तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए हो सकता है।

प्रधान डाकघर, सिरसा (हरियाणा) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन

दिनांक 13.02.2019 को प्रधान डाकघर, सिरसा (हरियाणा) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन किया गया।

जन साधारण की पासपोर्ट संबंधी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दिनांक 13.02.2019 को प्रधान डाकघर, सिरसा (हरियाणा) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन श्री चरणजीत सिंह रोड़ी (माननीय सांसद, सिरसा) ने श्री माखन लाल सिंगला (माननीय विधायक, सिरसा) एवं श्री सुभाष बराला (माननीय विधायक, टोहाना) की गरिमामयी उपस्थिति में किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ हरियाणा की मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्रीमती रंजू प्रसाद एवं क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज भी मौजूद थे।

सिरसा में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों के खुल जाने से क्षेत्र के लोगों को पासपोर्ट बनवाने के लिए अब लुधियाना अथवा चंडीगढ़ नहीं जाना पड़ेगा। आवेदक अब डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र, सिरसा में ही अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं।

★★★★★

बच्चों का कोना

शुद्धि आराधना ऊपर जाती है, आशीष लेकर नीचे आती है
प्रभु हमारे कितने महान, देखो हमसे करते प्यार।

श्री कृष्ण की वेशभूषा में नन्हा स्वास्तिक

कलाकृति: किरन कुमारी

आयांश

प्रणव

जल ही जीवन है

स्वरूप चन्द मेहता
सहायक अधीक्षक

जल पृथ्वी पर कई अलग-अलग रूपों में मिलता है। जल संपूर्ण सृष्टि की उत्पति का आधार है। जल आमतौर पर द्रव अवस्था में उपयोग में लाया जाता है जल पृथ्वी पर के अलग-अलग रूपों में मिलता है जैसे समुद्री जल आसमान में बादलों से बारिश और पहाड़ों पर बर्फ और नदियां। जल का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग खेती में होता है जो खाने के उत्पाद में महत्वपूर्ण है जल धरती पर रहने वाले प्राणियों के लिए अमृत है पर आज हम इसका दुरुपयोग किए जा रहे हैं आने वाले कुछ वर्षों में सभी जगह जल की कमी हो जाएगी। नदी नेहर तालाबों में नालों और फैक्ट्रियों का पानी छोड़ा जा रहा है। जिससे शुद्ध जल भी प्रदूषित हो रहा है जिसके कारण कई बीमारियां फैल रही हैं हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इस अमूल्य जल संपत्ति को बचाएं और ऐसे कदम उठाएं जिससे भूमिगत जल की मात्रा में बढोतरी हो सके। अधिक मात्रा में पेड़ पौधे लगाने होंगे और पेड़ों की कटाई पर रोक लगानी होगी तथा जन-जन में जागरूकता फैलानी होगी कि जल हमारे जीवन के लिए कितना आवश्यक है और इसका संरक्षण कैसे किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन की गतिविधियों में कम से कम जल का उपयोग करना होगा इस प्रकार लाखों लोगों का एक छोटा सा प्रयास जल संरक्षण अभियान में एक सकारात्मक परिणाम दे सकता है।

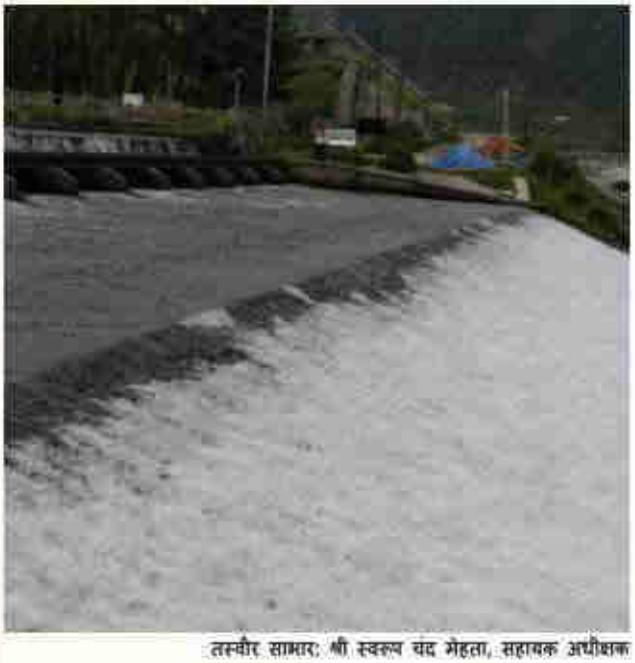

तस्वीर साभार: श्री स्वरूप चंद मेहता, सहायक अधीक्षक

"जल बचाओ जीवन बचाओ"

★★★★★

युवाओं के नाम संदेश

रूपलाल
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

भारत की नई पीढ़ी के सभी बच्चों के लिए मेरा यह एक संदेश ही नहीं बल्कि एक अपील भी है। बच्चों, जिंदगी में अच्छा बनो। अच्छा खाओ-पियो, अच्छे से पढ़ो-लिखो और अपने बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करो। अपने माता-पिता की भावनाओं का सम्मान करो और अपनी वाणी में मिठास रखो। यह आदमी के अच्छे बुरे होने का परिचय देती है। मेरी पुनः आप से अपील है कि अपने देश के प्रति प्रेम रखो और कोई भी ऐसा कार्य ना करें जिससे जिसके प्रति आपको बाद में शर्मिंदा होना पड़े, आपके प्रियजनों अथवा समाज को शर्मिंदा होना पड़े।

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कार

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए "ख" क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को विदेश मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत किया गया। विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी के अवसर पर दिल्ली में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय तत्कालीन विदेश मंत्री ने 'स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र' प्रदान कर सम्मानित किया। श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ एवं श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. हिंदी अनुवादक ने कार्यालय की ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया।

विदित हो कि विदेश मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है।

★★★★★

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोले जाने वाली भाषा हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है। ... प्रांतीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं। ... हिंदी के विरोध का कोई भी एक आंदोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कार ग्रहण करने के बाद प्रशस्ति पत्र के साथ क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करने के बाद (बाएँ से) पारपत्र अधिकारी, लखनऊ; पारपत्र अधिकारी, तिरुअनंतपुरम; विशेष कार्य अधिकारी (पीएसपी) एवं क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

साइबर अपराध

विभूति डोगरा
आईटी अभियंता
(टी.सी.एस.)

जब इंटरनेट को विकसित किया गया तब शायद ही इसके निर्माणकर्ताओं को यह पता होगा कि इसका गलत प्रयोग भी किया जा सकता है, जैसे कि आपराधिक गतिविधियों के लिए। वैसे तो लोगों को जोड़ने में इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है। लेकिन इसके साथ कई उपयोगकर्ता साइबर अपराध, जैसे कि 'हैकिंग' चोरी, पहचान चोरी और दूषित सॉफ्टवेयर का शिकार बन रहे हैं। इसलिए इनसे बचने के लिए आपको और आपके डाटा या जानकारी को सुरक्षित करना अधिक जरूरी है। इसके लिए आपको होने वाले साइबर अपराध की जानकारी होनी चाहिए। इंटरनेट या साइबर स्पेस में जो भी अपराध होते हैं उन्हें साइबर अपराध के नाम से जाना जाता है।

साइबर अपराध एक ऐसा अपराध होता है जिसमें कंप्यूटर एक वस्तु होता है जिसे अपराध (फिशिंग, हैकिंग, स्पैमिंग) के लिए प्रयोग में लाया जाता है। 'किसी गुप्त जानकारी की चोरी', 'किसी के पहचान की चोरी', ऑनलाइन छल, नफरत फैलाना, अपमान करना (इंटरनेट बुलिंग) इत्यादि अपराध की श्रेणी में आता है। वैसे अपराधी जो इन अवैध गतिविधियों को अंजाम देते हैं उन्हें 'हैकर' कहा जाता है। यदि यही अपराध व्यापक स्तर पर अख्तियार रूप ले ले तो उसे साइबर आतंकवाद कहा जाता है, और यह अत्यंत गंभीर विषय है।

साइबर अपराध के प्रकार :

हैकिंग : इस प्रकार के अपराध में हैकर किसी के निजी अथवा वर्जित क्षेत्र में घुसकर, अनुमति के बिना उसकी व्यक्तिगत और संवेदनशील जानकारियों को प्राप्त कर लेते हैं। यह वर्जित क्षेत्र किसी का निजी कंप्युटर हो सकता है अथवा कोई ऑनलाइन लेखा/जानकारी।

पहचान चुराना : यह अपराध आज के समय में सबसे अधिक देखा गया है। ऐसे अपराध में हैकर अधिकतर उन लोगों को लक्ष्य बनाते हैं जो इंटरनेट की सहता से ऑनलाइन माध्यम से पैसे का लेनदेन और बैंकिंग सेवाओं का प्रयोग करते हैं। एक अपराधी किसी व्यक्ति का सभी डाटा जैसे कि उसका बैंक खाता संख्या, क्रेडिट कार्ड का ब्यौरा, इंटरनेट बैंकिंग का ब्यौरा, व्यक्तिगत जानकारी, डेबिट कार्ड और दूसरी अन्य संवेदनशील जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। और फिर उन्हीं जानकारियों से अपने लिए ऑनलाइन खरीददारी कर लेते हैं।

दूषित सॉफ्टवेयर : इंटरनेट पर ऐसे बहुत से सॉफ्टवेयर या प्रोग्राम उपलब्ध हैं जो किसी भी नेटवर्क को खराब कर सकते हैं। ऐसे सॉफ्टवेयर को यदि किसी नेटवर्क में एक बार स्थापित कर दिया जाए, तो हैकर बड़ी आसानी से उस नेटवर्क में उपलब्ध सभी जानकारियों/ सूचनाओं को प्राप्त कर लेते हैं और साथ में नेटवर्क में स्थित डाटा का भी नुकसान कर सकते हैं।

साइबर अपराध से बचने के लिए सावधानियां एवं उपाय :

- **डेबिट व क्रेडिट कार्ड से निकासी की सीमा तय करना:** आप क्रेडिट कार्ड से खरीदारी अथवा नकदी निकासी की सीमा को दस से बीस हजार रूपये से अधिक न रखें। ऐसा करने से अगर आपके डेबिट अथवा क्रेडिट कार्ड की कभी क्लोनिंग हो जाए या वह चोरी हो जाए तो भी आप ज्यादा नुकसान से बच सकते हैं।
- **एंटीवायरस का प्रयोग :** हैकिंग और डाटा चोरी की अधिकतर घटनाएं वायरस के जरिए

अंजाम दी जाती हैं। ऐसे में आवश्यक है कि आप अपने कंप्यूटर में एंटी वायरस का प्रयोग करें।

- **अनचाहे लिंक पर क्लिक न करना :** यदि आप वायरस से बचना चाहते हैं तो फेसबुक, व्हाट्सएप, ईमेल आदि पर अनचाहे लिंक पर क्लिक न करें। सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) पर किसी भी अनजान शख्स के झांसे में न आएँ। यदि वह किसी लिंक पर क्लिक करने या जाने के लिए कहता है तो सावधान हो जाएँ। ऐसे लोगों को बिना उत्तर दिए अवरुद्ध (ब्लॉक) करें।
- **एक अंतराल के बाद पासवर्ड बदलते रहना :** आप अपने डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड या सामाजिक माध्यम खातों (सोशल मीडिया अकाउंट) का पासवर्ड समय-समय पर बदलते रहें। पासवर्ड कम से कम दस अंकों का रखें। कोशिश करें कि कोई नाम, जन्मतिथि या मोबाइल नंबर जैसी चीज है पासवर्ड ना हो।

★★★★★

क्रोध प्रबंधन

वीना
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

यह करें

- गुस्से की शुरुआत में आप जो और जैसा महसूस कर रहे हैं उसे स्पष्टता के साथ संक्षेप में सबके सामने व्यक्त कर सकते हैं।
- गुस्सा आने से ठीक पहले के संकेतों को समझने की कोशिश की जा सकती है जिससे गुस्से को बढ़ने से तुरंत हीरो रोका जा सके।
- स्वस्थ और मजेदार जगहों की खोज की जा सकती है।
- चुटकुले पढ़ें, फिल्म देखें, व्यायाम करें या कुछ लिखना भी शुरू कर सकते हैं।
- अपमान और निरादर करने वाले गुस्से को समझ कर उसमें अधिक से अधिक सुधार लाने की कोशिश करनी चाहिए।

यह न करें

- आप जैसा भी महसूस कर रहे हैं वह खुद की वजह से ही कर रहे हैं, तो उसके लिए दूसरों को दोष देना ठीक नहीं।
- अपनी और दूसरे की भावनाओं को अनदेखा ना करें वरना वह तनाव और पीड़ा में तब्दील हो सकती है।
- भागे नहीं, सबको बता कर जाएं कि आपको अभी एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही है।
- किसी को कसम खाने और किसी को डराने वाली हरकतें बिल्कुल न करें।
- केवल 'सॉरी' नहीं बोलें, स्वयं को बदलने के तरीके खोजना शुरू करें।

★★★★★

मैं हिंदी भाषा के कार्य को किसी भाषा की ही सेवा नहीं बल्कि राष्ट्र की सेवा का काम मानता हूँ। हिंदी संसार की एक विशाल जनसंख्या की भाषा है और उसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है। आवश्यकता इस बात की है कि इस भाषा को अंतरराष्ट्रीय व्यवहार में का माध्यम बनाया जाए।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा

उप डाकघर, बस्सी पठाना (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन

जन साधारण की पासपोर्ट संबंधी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दिनांक 09.02.2019 को उप डाकघर, बस्सी पठाना (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन श्री हरिंदर सिंह खालसा, माननीय सांसद, फतेहगढ़ साहिब ने श्री गुरप्रीत सिंह, माननीय विधायक, बस्सी पठाना की गरिमामयी उपस्थिति में किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ पंजाब के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री अनिल कुमार एवं क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज भी मौजूद थे।

बस्सी पठाना में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रों के खुल जाने से क्षेत्र के लोगों को पासपोर्ट बनवाने के लिए चंडीगढ़ नहीं जाना पड़ेगा। आवेदक अब डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र में ही अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं।

★★★★★

एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को उतना ऊंचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने तथा संसार को सभ्य बनाने में उतनी सफल नहीं हुई जितनी आगे चलकर हिंदी होगी।

गणेश शंकर विद्यार्थी

हिंदी : लोगों को जोड़ने वाली भाषा

राम दत्त शर्मा
सहायक अधीक्षक

आजादी के बाद 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा का गौरव प्राप्त हुआ। 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का निर्णय 1953 में लिया गया। उस दिन से लेकर आज तक हम भारतीय हर साल हिंदी दिवस मनाते आ रहे हैं। हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने में इस दिन का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है।

धीरे-धीरे हिंदी भाषा का प्रचलन बढ़ा और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद किया जाने लगा। इसका एक कारण यह भी है कि हिंदी हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है।

परंतु वैश्वीकरण के युग में आज भी हिंदी जानने और बोलने वालों को कई जगह अनपढ़ और गँवार के रूप में देखा जाता है। या यूँ कहें कि हिंदी बोलने वालों को तुच्छ नजरिए से देखा जाता है, जो कतई सही नहीं है। हम अपने ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं। घर पर अतिथियों के सामने यदि बच्चा अंग्रेजी में कोई कविता सुना देता है या दो बात कर लेता है तो माता-पिता अथवा अभिभावक गर्व महसूस करते हैं, परंतु यदि हिंदी में ऐसा कुछ हो तो अधिक भाव नहीं दिया जाता। इन्हीं कारणों से कई लोग हिंदी बोलने से कतराते हैं। माता-पिता आजकल अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए हर कोशिश करते हैं। और कई स्कूलों में तो अंग्रेजी सहित विदेशी भाषाओं पर तो विशेष ध्यान दिया जाता है लेकिन हिंदी पर नहीं। वर्तमान दृष्टि में एक हिंदुस्तानी को कम से कम अपनी मातृभाषा और हिंदी अच्छे से बोलने और लिखने आना ही चाहिए। साथ ही साथ हमें हिंदी का उचित सम्मान करना भी सीखना होगा।

★★★★★

स्वास्थ्य ही धन है

शिव कुमार सिंह
कनिष्ठ पारपत्र सहायक

स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। एक बीमार व्यक्ति अपनी धन-दौलत, सुख सुविधाओं एवं खाने पीने की वस्तुओं का सही उपभोग नहीं कर सकता। किसी ने सच कहा है कि 'बीमार धनी होने की अपेक्षा स्वस्थ गरीब होना अधिक अच्छा है।' अस्वस्थ व्यक्ति को अपना जीवन भार लगने लगता है। वहीं स्वस्थ व्यक्ति की बात ही निराली है, वह मस्ती में जीता है, उसके मन-मस्तिष्क में उमंग और हर्ष के भाव रहते हैं, वह अपने कार्य को पूरे उत्साह से करता है। इसलिए तो कहा गया है कि स्वास्थ्य ही धन है। सुखी एवं स्वस्थ जीवन के लिए प्रयत्न करना मनुष्य का दायित्व है, इसके लिए व्यायाम, योगासन तथा स्वस्थ दिनचर्या को अपनाना श्रेयस्कर एवं जरूरी होता है। जो व्यक्ति अपने खान-पान का उचित ध्यान रखता है, सकारात्मक सोच रखता है वह स्वस्थ रहकर ईश्वर के दिए गए उपहारों का लाभ उठाता है, उनका विवेकपूर्ण उपभोग करता है। स्वास्थ्य और धन की रक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए। यह भी कहा भी गया है कि 'एक तंदुरुस्ती हजार नियामत।' स्वस्थ जीवन सभी सुखों का आधार है।

उप डाकघर, रोपड़ (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन

जन साधारण की पासपोर्ट संबंधी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दिनांक 09.02.2019 को प्रधान डाकघर, रोपड़ (पंजाब) में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र का उद्घाटन श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा, माननीय सांसद, आनंदपुर साहिब ने श्री अमरजीत सिंह संदोआ, माननीय विधायक, रोपड़ की गरिमामयी उपस्थिति में किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ पंजाब के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री अनिल कुमार एवं क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ श्री शिवास कविराज भी मौजूद थे।

रोपड़ में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र के खुल जाने से क्षेत्र के लोगों को पासपोर्ट बनवाने के लिए अब चंडीगढ़ नहीं जाना पड़ेगा। आवेदक अब डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र में ही अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं।

★★★★★

सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। ... राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य गंगाधर तिलक

करो योग, रहो निरोग

राजीव खेतरपाल
सहायक अधीक्षक

21 जून 2015 को पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया गया था। इस दिन विश्वभर के करोड़ों लोगों ने योग किया जो कि एक कीर्तिमान था। योग से न केवल शरीर के अंगों बल्कि मन और आत्मा के बीच भी संतुलन बनाया जा सकता है। यही कारण है कि योग से शारीरिक व्याधियों के अलावा मानसिक समस्याओं से भी निजात पाई जा सकती है। हिन्दू धर्म में साधु-सन्यासियों, योगिऋषियों द्वारा योग को सदियों से ही अपनाया गया है, परंतु आम लोगों में इस विधा का प्रचलन हुए अभी बहुत अधिक दिन नहीं हुआ है। इसके बावजूद योग की महिमा और महत्व को जानकर इसे स्वस्थ जीवनशैली हेतु देश-विदेश में लोगों द्वारा अपनाया जा रहा है। इसे व्यापक स्तर पर अपनाने का प्रमुख कारण है व्यस्त तनावपूर्ण और अस्वस्थ दिनचर्या में इसका सकारात्मक प्रभाव।

तनाव भरी जीवनशैली में अगर आप कुछ समय निकालकर योग करते हैं तो अपने शरीर में दिनभर ऊर्जा बरकरार रख सकते हैं। आपकी क्षमता भी बढ़ जाती है, शरीर लचीला और मजबूत बनता है। स्फूर्ति बनी रहती है और आप स्वस्थ रहते हैं।

तस्वीर साभार: गूगल

योग किसी के भी द्वारा विशेष रूप से किशोरों और वयस्कों द्वारा जीवन के लिए आवश्यक सक्रियता के लिए दैनिक आधार पर व्यायाम के रूप में किया जा सकता है। यह जीवन के कठिन समय, विद्यालय, मित्र, परिवार और पड़ोसियों के दबाव को कम करने में भी मदद करता है। योग के माध्यम से व्यक्ति एक व्यक्ति दूसरों के द्वारा दी जाने वाली समस्याओं और तनावों को गायब कर सकता है। यह शरीर, मस्तिष्क और प्रकृति के बीच में आसानी से संपर्क स्थापित करने में हमारी सहायता करता है।

वास्तव में योग वह क्रिया है जो शरीर के अंगों की गतिविधियों और सांसों को नियंत्रित करता है। यह शरीर और मन दोनों को पति से जोड़कर आंतरिक और बाहरी ताकत को बढ़ावा देने का कार्य करता है। विभिन्न प्रकार के योग विभिन्न उद्देश्यों के लिए बनाए जाते हैं। इसलिए केवल आवश्यक और सुझाए गए लोगों का ही अभ्यास करना चाहिए। यह केवल एक शारीरिक ही नहीं है यह मनुष्य को मानसिक भावनात्मक और आत्मिक विचारों पर नियंत्रण करने के योग्य बनाता है।

★★★★★

मेरी समझ में हिंदी एक ऐसी आधुनिक भाषा बन गयी है, जिसमें नए शब्दों की खपत आसानी से हो सकती है और नए विचारों को बड़ी सरल भाषा में व्यक्त किया जा सकता है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी के लिए भारत की राष्ट्रभाषा होना बड़ा आसान हो गया है।

दीनबंधु सी एफ एंड्रयूज

स्वच्छ भारत अभियान

राजेन्द्र प्रसाद
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

स्वच्छ भारत के अभियान की शुरुआत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2014 को की थी। सरकार ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती, ०२ अक्तूबर २०१९ तक देश को स्वच्छ करने का लक्ष्य रखा है। इस अभिनव प्रयास के कारण साफ-सफाई को लेकर न केवल सुधार हुए हैं अपितु लोगों ने स्वच्छता के प्रति अच्छी आदतों को भी अपनाया है। भारत सरकार इस अभियान को पूरा करने के लिए सतत प्रयासरत है।

इस अभियान के अंतर्गत कई योजनाएं शामिल हैं। शहरों में सार्वजनिक स्थलों जैसे - रेलवे स्टेशन, मुख्य बाजार व भीड़भाड़ की जगह, बस स्टैंड आदि जगहों पर शौचालय बनाने की योजना है। ग्रामीण इलाकों की बात करें तो सरकार ने ग्रामीण इलाकों में प्रत्येक घर में शौचालय बनाने के लिए एकमुश्त धनराशि देने की भी योजना बनाई है, जिससे वहाँ लोग अपने घरों में शौचालय का निर्माण करवा सकें और देश को स्वच्छ करने में अपना योगदान दे सकें।

हालांकि हमारे देश में अभी भी कई जगहों पर स्वच्छता का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा जाता। कई शहरों और गाँवों में जगह-जगह कूड़ा-करकट के ढेर बहुधा देखे जा सकते हैं। अधिकतर जगहों पर आज भी शौचालय की सुविधा नहीं है, जिसके कारण लोगों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। साफ-सफाई की कमी और गंदगी के कारण ही यहाँ अनेक प्रकार की बीमारियां आसानी से लोगों को अपने चपेट में लेती रही हैं। गंदगी होने के कारण विदेशी पर्यटकों की कमी होगी जिसका असर हमारे, कहीं न कहीं, देश के आर्थिक विकास पर भी पड़ता है।

हम सभी का भी यह कर्तव्य है कि हम अपने घर, मोहल्ले, गाँव व शहर को गंदगी से मुक्ति दिलाने के लिए तथा इस अभियान को तेज गति देने के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। स्वच्छ भारत अभियान से न केवल भारत स्वच्छ होगा बल्कि देश में हर तरफ खुशहाली आएगी, कई बीमारियों से मुक्ति मिलेगी। हमें भी इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए और अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करना चाहिए।

तस्वीर साभार : स्वरूप चन्द्र मेहता, सहायक अधीक्षक

बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन

सुखदेव कुमार
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

जहाँ विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि मनुष्य सरोगेसी से संतान उत्पत्ति कर रहा है और अब प्राकृतिक अंग विकसित किए जा रहे हैं वहीं हमारे देश में जनसंख्या का निरंतर विकराल रूप लेते जाना हमारी आधुनिक सोच समझ इच्छाशक्ति और समूची व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। बढ़ती जनसंख्या और घटते संसाधन आखिर हमें कहाँ ले जा रहे हैं। सबसे पहले जनसंख्या नियंत्रण के लिए हमें समाज की मानसिकता (माइंडसेट) को बदलना होगा। पुराने समय में संसाधन बहुतायत में थे, लेकिन आज के दौर में एक या दो संतान वाले परिवार ही एक पीढ़ी में छलांग लगाकर सामाजिक व शैक्षणिक स्तर ऊँचा कर पाते हैं, क्योंकि संसाधन पाँच-सात संतानों में नहीं बंटते। अमेरिका जैसे विकसित देश संसाधन अधिक और जनसंख्या कम होने के कारण ही धन-धान्य पूर्ण है। कहा भी जाता है कि वे परिवार पूजनीय होते हैं, जहाँ संतान से माता-पिता की पहचान हो। समाज को प्रेरित किया जाए कि एक संतान भी आपका नाम रोशन कर सकती है। लोगों में जागरूकता के लिए हम सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) का प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि समाज में बच्चा चोरी, नमक खत्म, पोलियो ड्राप से नपुंसकता जैसी बीमारी होने आदि जैसी बेसिर-पैर की अफवाहें तो रातों-रात विस्तार पा लेती हैं लेकिन अच्छी बातों का प्रचार-प्रसार कोठरी में सिर देकर रो रही होती है। सोचो एक कमरे में 20 व्यक्ति ठूंस दिया जाए तो क्या होगा? इसका विस्तृत रूप ही तो देश में जनसंख्या की विस्फोटक स्थिति है।

★★★★★

पानी

रोशन सिंह
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
जरूरत के अनुसार मिल जाए तो लगे अमृत जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
मेरे खेत-खलिहान ही बहा ले जाए तो लगे जहर जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
गरीबों की झोपड़ी में घुस जाए तो लगे दुश्मन जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
किसानों को हरी-भरी फसल बहा ले जाए तो लगे जहर जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसागाँव के गाँव उजड़ जाए तो लगे जहर जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
गरीबों के मकान-जानवर बहा ले जाए तो लगे दुश्मन जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा
अपने प्रिय की जान ले ले तो लगे दुश्मन जैसा
पानी रे पानी तेरा रंग-रूप कैसा

मानवीयता

जयबीर सिंह भंडारी
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

मानव जीवन का उद्देश्य अपने मन, वचन और कर्म से दूसरों की मदद करना है। जो लोग दूसरों की मदद को सदैव तत्पर रहते हैं, उन्हें जीवन में तनाव कम होता है और मानसिक शांति एवं आनंद का अनुभव ज्यादा होता है। इसकी वजह यह है कि ऐसे लोग अपनी आत्मा से गहरे रूप से जुड़े हुए होते हैं। ऐसे लोग अपने-पराए का भेद कदापि नहीं करते हैं, बल्कि वो तो हर वक्त किसी के दुख-दर्द को अपनी आत्मा से महसूस करते हैं, इसलिए दूसरों की मदद करने को हमेशा तैयार रहते हैं। जब तक हम दूसरों के दुख-दर्द को अपनी आत्मा से नहीं करेंगे तब तक उनकी मदद नहीं कर सकते।

सभी मनुष्यों द्वारा आपस में प्रेम और सहयोग करने का मूल पाठ मानव धर्म सिखाता है। यहाँ जाति, धर्म, संप्रदाय, देश इत्यादि के लिए कोई स्थान नहीं है। मानवीयता के अभाव में किसी सभ्यता व संस्कृति का विकास भी संभव नहीं है। मनुष्य द्वारा मनुष्य से प्रेम करने से ही उसकी सभ्यता व संस्कृति का विकसित होती है। इसके विपरीत यदि किसी व्यक्ति का नैतिक आदर्शों में विश्वास नहीं है तो माना जाएगा कि वह अभी मानव धर्म से बहुत दूर है।

सभी नैतिक मूल्यों का मूल मानवीयता ही है। विश्व में प्रत्येक देश की भाषा-संस्कृति भिन्न-भिन्न हो सकती है, लेकिन सभी के कल्याण का मानवीयता में है। हमें यह मानव जीवन किसी भी कीमत पर व्यर्थ और उद्देश्यहीन नहीं जाने देना चाहिए। विश्व की सुख-समृद्धि की कामना ही हमारे जीवन का उद्देश्य होनी चहिए। केवल अपने सुख-सुविधा की चाह हमें मानव होने से अलग कर देती है। हमारे जीवन की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब हम दूसरों के दुख-दर्द में साथ निभाएंगे। यदि हमने अथाह भौतिक संपन्नता भी प्राप्त कर ली लेकिन हमारे भीतर मानवीयता का अभाव हो तो सारी उपलब्धियां निरर्थक रह जाएंगी। मान्वीयता के प्रति समर्पित होने वाला मनुष्य ही सुखी और संपन्न रह सकता है। परोपकार से ही कल्याण संभव है। यदि हम किसी कामना या चाह के लिए दूसरों की सेवा करते हैं तो वह मानवीयता नहीं है।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं **"निस्वार्थ भाव से सेवा करना मानव का सबसे महान कर्म है"।** मानवीयता के भाव से व्यक्ति दूसरों के दुखों को दूर करने की चेष्टा में अपनी परेशानियों को भूल जाता है और उसके तन-मन का सामर्थ्य बढ़ जाता है।

कलाकृति: किरन कुमारी

मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

सुनीता
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

वर्तमान युग सूचना का युग है। आज वही व्यक्ति या राष्ट्र आगे बढ़ सकता है जिसके पास संचार माध्यमों की बेहतर सुविधा-व्यवस्था है। और सूचना क्रांति के इस युग में मोबाइल फोन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समय के साथ-साथ इसमें भी परिवर्तन होते रहते हैं। कुछ सालों पहले मोबाइल से केवल बात करने की सुविधा होती थी। कालांतर में इसमें इंटरनेट की सुविधा भी जुड़ गई है।

मोबाइल फोन का विकास भारत में 90 के दशक में शुरू हुआ। धीरे-धीरे मोबाइल कीपैड से आगे बढ़कर टच-स्क्रीन, साधारण फोन से स्मार्टफोन का रूप ले बैठा है। मोबाइल एवं इंटरनेट की सहायता से हमें ढेर सारी सूचनाएं मिल सकती हैं। आज चाहे अमीर हो या गरीब, युवा हो या बुजुर्ग, महिला हो या पुरुष, सभी वर्ग के पास बिना किसी भेदभाव के मोबाइल उपलब्ध है।

किसी ज़माने में फोन से बात करना विलासिता का पर्याय माना जाता था, लेकिन निजी कंपनियों के आगमन से एवं प्रतिस्पर्धा बढ़ने से कॉल रेट और इंटरनेट दोनों के दाम सस्ते हुए हैं। इससे ग्राहकों को काफी राहत मिली। इसी बीच जिओ कंपनी ने ग्राहकों को कॉल, इंटरनेट और मोबाइल फोन पर भारी छूट प्रदान कर ग्राहकों को और सुविधाएँ उपलब्ध करा रही है।

मोबाइल फोन के लाभ

- मोबाइल फोन की सहायता से आप कहीं भी, कभी भी किसी से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।
- आप अपने मनोरंजन के लिए गीत-संगीत सुन सकते हैं, ऑनलाइन या ऑफलाइन गेम खेल सकते हैं एवं फिल्में भी देख सकते हैं।
- मोबाइल फोन से आप अपने खूबसूरत पलों को कैमरे में कैद कर सकते हैं।
- मोबाइल फोन से आप घर बैठे अपने कई काम निपटा सकते हैं। जैसे:- बिजली, पानी, गैस आदि के बिल का ऑनलाइन भुगतान, अन्य खरीददारी।
- इसकी सहायता से हम घर बैठे कई जानकारियाँ जुटा/भेज सकते हैं।
- सबसे बड़ा लाभ मोबाइल फोन का यह है कि हम किसी तक समय पर सूचना पहुँचा सकते हैं, जिससे कि किसी को इंतजार नहीं करना पड़ता।

मोबाइल फोन से हानि

- मोबाइल खोने पर कई बार इसमें संचित सूचनाएँ बर्बाद हो जाती है।
- मोबाइल से निकलने वाले रेडिएशन से हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
- इसका अधिक उपयोग करने से सुनने की क्षमता प्रभावित होती है।
- गाड़ी चलाते समय मोबाइल के प्रयोग से दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है।
- कई लोग मोबाइल का विवेकपूर्ण प्रयोग नहीं करते, और इसका गलत प्रयोग भी करते हैं, जैसे किसी अंजाने नंबर गलत नंबर पर कॉल कर किसी को परेशान करना, चोरी-छिपे किसी की तस्वीर खींचना।

अनमोल जीवन

विनीत सैन
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

एक हीरा व्यापारी था। वह हीरे का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता था, किंतु गंभीर बीमारी के चलते अल्प आयु में ही उसकी मृत्यु हो गई। पीछे वह अपनी पत्नी और एक बेटा छोड़ गया। जब बेटा बड़ा हुआ तो उसकी माँ ने कहा "बेटा! मरने से पहले तुम्हारे पिताजी एक पत्थर छोड़ गए थे। इसे लेकर बाजार जाओ और इसकी कीमत का पता लगाओ। ध्यान रहे कि तुम्हें केवल इसकी कीमत पता करनी है, इसे बेचना नहीं है।"

युवक पत्थर लेकर बाजार के लिए निकला। सबसे पहले उसे एक सब्जी बेचती हुई औरत मिली। "अम्मा, तुम इस पत्थर के बदले मुझे क्या दे सकती हो?" उसने पूछा। "देना ही है तो दो गाजरों के बदले मुझे ये दे दो.... मुझे तौलने के काम आएगा।" उस औरत ने कहा।

★★★★★

माता-पिता

सोनिया
डाटा एंट्री ऑपरेटर

माता-पिता का रूप निराला
जग में सबसे बड़ा दिलवाला
हमारे दुख भी सहते हैं
लेकिन कभी नहीं कुछ कहते हैं

अपने भूखे रहकर
हम बच्चों का पेट भरते हैं
अपने जागकर हमारे सपने पूरे करते हैं
दुनिया की भीड़ में अपने खोकर
हमारी पहचान आते हैं

हमारा सहारा बनकर
हमें गिरकर भी संभलना सिखाते हैं
कभी दोस्त तो कभी मार्गदर्शक बनकर
जीवन का ज्ञान देते आते हैं

मैं उनका कमरा टटोलना चाहती हूँ
वे अपनी परेशानी कहाँ रखते हैं
ये देखना चाहती हूँ
उन्हें भगवान का भगवान कहना चाहती हूँ।

कलाकृति: किरन कुमारी

वर्तमान युग में हिंदी

रमेश कुमारी
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

आज हमारे देश को आजाद हुए काफ़ी समय हो चुका है। जितनी रफ्तार से हमने तरक्की की है उसकी मिसाल हमें हर क्षेत्र में सहज ही देखने को मिल जाती है। परंतु एक ओर जहाँ पर हमने तरक्की की है वहीं दूसरी ओर कहीं न कहीं पर हम अपना वजूद खोते जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी बेहद स्फूर्ति से संस्कारों व अपनी मातृभाषा को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करने में लगी हुई है। आज के नौजवानों में कइयों को तो शायद यह भी नहीं पता होगा कि हमारा हिंदी साहित्य भी अपने आप में पूरा खजाना समेटे हुए है। ना तो शिक्षक ही उन्हें उस ओर अग्रसर करते हैं और ना ही अभिभावक। हिंदी साहित्य में एक से बढ़कर एक कवि हुए हैं। वहीं पर साहित्य की रचना करने वाले बुद्धिजीवी भी हैं जिन्होंने इतना सरल और सीधा साहित्य सृजन किया है जो आज के नौजवानों और विद्यार्थियों को सहज ही समझ में आ सकता है। साहित्य सृजनकारों ने साहित्य में संस्कारों, सांस्कृतिक मूल्यों का भी समावेश किया है। बस जरूरत है आज के युवाओं को सचेत करने की, ताकि हमारा साहित्य हमारी पहचान बन सके और लोग गर्व से उसका अनुसरण कर सकें।

एक चीनी कहावत है 'पौधे रोपने का सही समय'। समय परिवर्तनशील है। पुराने दिन बहुत याद आते हैं। याद आते हैं वे नाते-रिश्तेदार और बेज़ान पहचान के लोग जिन्हें हम उनके नाम से कम और उनके आँगन में लगे वृक्ष या लताओं से ज्यादा जानते थे। वह 'अमरुद वाली बुआ', वह 'जामुन वाले मौसा', 'आम वाले ताऊ' और भी न जाने क्या-क्या। कभी एक जमाना था जब गर्मी की दोपहर में बच्चों को घर से बाहर नहीं जाने दिया जाता था। उस पीपल के पेड़ के पास मत जाना वहाँ भूत रहते हैं। शाम को टहलने के बाद किसी वृक्ष या पौधों को छूना मना होता था। यह कह दिया जाता था कि पौधे सो रहे हैं, उन्हें तंग नहीं करना। और यह भी कि पौधों पर पक्षियों और कीट-पतंगों का घर होता है। यह कैसी संवेदनाएं थी जो हमारे आसपास के वातावरण को जीवित रखा करती थी। अब वक्त आ गया है अपने घरों और आँगन को फिर से पौधों और वृक्षों की सौगात दी जाए। हम सब अपने आसपास के वातावरण को संतुलित रखने और बढ़ते तापमान को नियंत्रित करने में अपनी छोटी-छोटी भूमिका निभाएं। पृथ्वी को प्राण शक्ति देने वाले वृक्ष हम सबके लिए भी बहुत जरूरी है। सालों पहले लगाए गए पौधे आज पूर्ण विकसित होकर हमें प्राणवायु दे रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी का यह दायित्व है कि वह आज वृक्षारोपण करें और अपने बच्चों के साथ पौधों की देखभाल करे।

★★★★★

राष्ट्रीय कार्य के लिए भी हिंदी आवश्यक है। इस भाषा से देश की उन्नति होगी। -
गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

माँ की ममता

कंचन शर्मा
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

तस्वीर साभार: गूगल

माँ की ममता, करुणा न्यारी
जैसे दया की चादर
शक्ति देती नित दिन हम सबको
बन अमृत की गागर

साया बनकर साथ निभाती
चोट न लगने देती
पीड़ा अपने ऊपर ले लेती
सदा-सदा सुख देती

संस्कार वह हमें बताती
अच्छा-बुरा वह हमें बताती
हमारी गलतियों को है सुधारती
हम सब पर वह प्यार बरसाती

माँ बिन जीवन है अधूरा
खाली-खाली सूना-सूना
हमारी खुशी में खुश हो जाती
दुख में हमारे आँसू बहाती

★★★★★

जीवन और संगीत

हमारे जीवन में संगीत का बहुत महत्व है। संगीत प्राचीन काल से लेकर आज तक चले आ रहा है। पहले के राजा-महाराजा संगीत आदि सुनकर अपना मनोरंजन किया करते थे। आज संगीत ने अपनी पैठ, क्या आम क्या खास, लगभग सभी लोगों तक बना ली है। मेरी मानिए तो संगीत एक ऐसा जादू है जो इंसान को अपनी ओर खींचता है। संगीत से हमारी कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, संगीत सुनकर तो मनोरोगी भी ठीक हो जाते हैं; इसलिए भी मनुष्य के जीवन में संगीत का व्यापक प्रभाव एवं महत्व है। यदि मनुष्य मशीन होता तो उसे दुख-सुख का कोई अहसास ना होता, भाव, क्रोध, दुख, सुख, अध्यात्म सभी के तार किसी न किसी रूप में संगीत से जुड़े हैं। संगीत वह कला है जिसके द्वारा इंसान अपने हृदय के भावों को सुर और लय की सहायता से सुंदर रूप में प्रकट कर सकता है। संगीत मनुष्य के लिए रामबाण औषधि की तरह है जिस का श्रवण करते ही तात्कालिक शांति मिलती है।

एक कविता माँ के नाम

सोनम तोमर
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

है माँ! हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ
कभी डाँटती है हमें तो कभी गले लगा लेती है माँ
हमारी आँखों के आंसू अपनी आँखों में समा लेती है माँ
अपने होठों की हँसी हम पर लुटा देती है माँ
हमारी खुशियों में शामिल होकर अपने गम भुला देती है माँ

जब भी कभी ठोकर लगे तो हमें तुरंत याद आती है माँ
दुनिया की तपिश में हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ
खुद चाहे कितनी थकी हो हमें देख कर अपनी थकान भूल जाती है माँ
प्यार भरे हाथों से हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ
बात जब भी हो लजीज खाने की तो हमें याद आती है माँ

रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ
लफ्जों में जिसे बयां नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं ऐसी होती है माँ।

कलाकृति: किरन कुमारी

★★★★★

पेड़ लगाएं, जीवन में खुशहाली लाएं

कर्मवीर सिंह
कनिष्ठ पारपत्र सहायक

आज हमारे देश में मनुष्य अनेक प्रकार की बीमारियां से ग्रसित है। इन बीमारियों में एक प्रमुख कारण है : प्रकृति से छेड़छाड़। मनुष्य अपने स्वार्थ और लालच के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई कर पर्यावरण के साथ जमकर खिलवाड़ कर रहे हैं। पेड़ हमारे लिए बहुत आवश्यक हैं। हमारे शरीर के लिए जैसे खाना, भोजन, वायु आदि आवश्यक हैं वैसे ही पेड़ भी बहुत जरूरी हैं। हमारे शरीर में प्रवाहित होने वाला ऑक्सीजन हमें पेड़ों से ही प्राप्त होता है। एक पेड़ कई लोगों को ऑक्सीजन देता है। हमें हमारे आसपास के पेड़ों को बचाना होगा। जो व्यक्ति पेड़ों को काटता है, उसको काटने से रोकना होगा। क्योंकि पेड़ हमारे जीवन का अस्तित्व हैं। अगर पेड़ नहीं बचेंगे तो हमारे अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडराने लगेंगे।

पेड़ों से हमें न केवल फल-फूल मिलते हैं बल्कि वो हमें जीवन भी देते हैं। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर हम अपने जीवन को अच्छी तरह से जी सकते हैं। पेड़-पौधे हमारे लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। अगर हम पेड़ लगाएंगे तो ही हम जीवन को बचा पाएंगे और खुशहाली की जिंदगी जी सकेंगे। हम सभी को अपने जीवन में कुछ पेड़ जरूर लगाने चाहिए।

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय में आयेजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

★★★★★

कार्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ ग्रहण की झलकियाँ

★★★★★

अंग्रेजी का माध्यम भारतीयों के शिक्षा में सबसे बड़ा कठिन विघ्न है। ... सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय के शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

महामना मदन मोहन मालवीय

प्रदूषण

राकेश मेचू
कनिष्ठ पारपत्र सहायक

प्रदूषण एक धीमा जहर है जो हमारे पर्यावरण और जीवन को नष्ट कर रहा है। प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। वायु प्रदूषण वाहनों एवं कल-कारखानों से निकलने वाले धुएँ और जहरीली गैसों आदि से होती है। जल प्रदूषण मुख्यतः जलस्रोतों, नदियों और तालाबों आदि में प्लास्टिक, कूड़े-कचरे के बहाने व अन्य वस्तुएँ डालने से होता है। ध्वनि प्रदूषण - ध्वनि के शोर से। वह चाहे मशीनों का कर्कश शोर हो या वाहनों की तेज कानफोड़ू आवाज।

प्रदूषण और अनियमित जीवनशैली के कारण मनुष्य कई गंभीर बीमारियों की चपेट में आ रहा है। अधिकतर लोगों को कैंसर, डायबिटीज, अस्थमा जैसी बीमारियां हो रही हैं। प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण जलीय जीव-जंतुओं और पशु-पक्षियों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

प्रदूषण की रोकथाम के लिए तत्काल उपयुक्त कदम उठाने चाहिए। पहले से चल रहे कार्यक्रमों को प्रभावी तरीके से लागू करना चाहिए। अधिक से अधिक संख्या में पेड़-पौधे लगाने चाहिए। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगनी चाहिए। कल-कारखानों से निकलने वाले कचरा, धूल- धुएँ का उचित निपटान करना चाहिए। जलस्रोतों में कचरा डालने पर रोक लगानी चाहिए। ध्वनि प्रदूषण के कारकों की पहचान कर इसे कम करने हेतु उपाय करने चाहिए। पहले हमें स्वयं को सुधारना होगा और अधिक से अधिक अधिक लोगों को भी जागरूक करना होगा।

★★★★★

फिट रहें, हिट रहें

राकेश कुमार
कनिष्ठ पारपत्र सहायक

हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री ने 'फिट इंडिया मूवमेंट' की शुरुआत की है। इस मुहिम का उद्देश्य लोगों को शारीरिक रूप से सेहतमंद रहने के लिए प्रेरित करना है। एक नागरिक चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो, अगर वह स्वस्थ नहीं है, फिट नहीं है तो अपने क्षेत्र में ऊँचाइयाँ नहीं छू सकता। सफलता और फिटनेस एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

अगर मैं क्रिकेट की बात करूं तो पहले ऐसा होता था कि जो खिलाड़ी अच्छा क्रिकेट खेलता था वह भारतीय टीम में चुन लिया जाता था। लेकिन आजकल अच्छा खेलने के साथ-साथ खिलाड़ियों का फिट होना भी जरूरी हो गया है। अब सबसे पहले खिलाड़ी को यो-यो टेस्ट देना होता है। अगर कोई खिलाड़ी अच्छा खेलता है पर यो-यो टेस्ट को पास नहीं कर पाता तो उसका चयन भारतीय टीम में नहीं हो पाता है। विराट कोहली और महेंद्र सिंह धोनी जैसे खिलाड़ी विश्व क्रिकेट के सबसे फिट खिलाड़ी माने जाते हैं।

आजकल डायबिटीज, हाइपरटेंशन आदि जैसी कई बीमारियों का नाम अक्सर ही सुनने को मिल जाता है। पहले हम सुनते थे कि 50-55 या ६० वर्ष की आयु में किसी को हृदयाघात (हार्ट अटैक) आता था, पर आजकल तो युवाओं में भी इन बीमारियों का होना आम सा हो गया है। आज की भाग-दौड़ भरे जीवन में फिट रहना बहुत जरूरी है।

"इसलिए फिट रहें, हिट रहें।"

चुटकुले

संकलन
राकेश सिंह
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

संकलन
साहिल कुमार ठाकुर
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

अधिक सुंदर कौन?

पत्नी: हम दोनों में से सुंदर कौन है?

पति: मैं

पत्नी: कैसे?

पति: तुम ब्यूटी पार्लर क्यों जाती हो...

वो तो भगवान का शुक्र है कि पति अक्सर सुंदर ही होते हैं, वरना दो-दो लोगों का ब्यूटी पार्लर जाना कितना भारी पड़ता!

डॉक्टर ने मना किया है

पप्पू समोसे को खोलकर अंदर का मसाला ही खा रहा था।

फेकू- अरे! तू पूरा समोसा क्यों नहीं खा रहा?

पप्पू- अरे मैं बीमार हूँ ना...

इसलिए डॉक्टर ने बाहर की चीज खाने से मना किया है।

घनघोर बेइज्जती

लड़का: तुम्हें मेरे अंदर सबसे अच्छी बात क्या लगती है?

लड़की: लोग समय के साथ बदल जाते हैं लेकिन तुम नहीं बदले।

लड़का: वह कैसे?

लड़की: जब मैं तुमसे मिली थी तब भी बेरोजगार थे और आज भी बेरोजगार हो।

वकील का कार्यालय

एक वकील ने नया कार्यालय खोला, दूसरे ही दिन पहला क्लाइंट आता दिखाई दिया..

जैसे ही क्लाइंट कार्यालय में घुसने लगा वकील ने टेलीफोन उठाकर क्लाइंट को दिखाते हुए बोला- देखो रमेसर तुम नन्हकू जी से कहो कि वह केस जीत गए हैं...

फिर आए हुए व्यक्ति की ओर देखकर बोला- जी कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

व्यक्ति हिचकिचाते हुए बोला- मेरी सेवा, नहीं...? मैं तो खाली आपका टेलीफोन ठीक करने आया था!

टीचर: बताओ बच्चों, वास्कोडिगामा भारत कब आया था

टीचर: बताओ बच्चों, वास्कोडिगामा भारत कब आया था?

चिंटू: जी सर्दियों में आया था।

टीचर: बुद्धू हो क्या? तुम्हें किसने कहा कि वह सर्दियों में आया था?

चिंटू: मैंने किताब में फोटो देखी थी, उसने कोट पहन रखा था।

---

15 फलों के नाम

टीचर: 15 फलों के नाम बताओ...

सोनू: आम, केला, अमरूद...

टीचर: शाबाश, 12 और फलों के नाम बताओ...

सोनू: एक दर्जन केले...

कोई बात नहीं

दुकानदार: मुझे एक घंटे हो गए आपको कपड़े दिखाते हुए, मुझे अफसोस है कि आपको कुछ पसंद नहीं करवा पाया।

महिला: कोई बात नहीं, मैं तो वैसे भी सब्जी लेने निकली थी।

पैदल क्यों आ रहे हो

लड़की - तुम पैदल क्यों आ रहे हो? गाड़ी से आना चाहिए था न...

लड़का- तुमने ही तो कहा था धीरे-धीरे से मेरी जिंदगी में आना...

लड़का अपने पापा का पारा है

लड़की: मैं अपने पापा की परी हूँ...

लड़का: मैं भी अपने पापा का पारा हूँ...

लड़की: पारा? ये क्या है?

लड़का: मुझे देखते ही उनका पारा चढ़ जाता है...

पाठकों के बहुमूल्य सुझाव व टिप्पणियाँ

महोदय आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'हिंदी गौरव' के द्वितीय अंक का अवलोकन किया गया, बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य है। पत्रिका में हिंदी, योग, कविताओं के साथ समसामयिक विषयों का सुंदर समावेश है तथा आपके कार्यालय की उपलब्धियों का भी विवरण है जो प्रशंसनीय है। आपकी पत्रिका इस कार्यालय के लिए भी प्रेरणादायी है। आशा है इस कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'कायाकल्प' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन भी शीघ्र ही संपन्न होगा, जिसे आप सब के अवलोकनार्थ प्रेषित किया जाएगा। पत्रिका से संबद्ध समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

पीयूष वर्मा, (आ.वि.से.)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, लखनऊ

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र संख्या : 1(17)2001/ क्षे.पा.का./चंडी/प्रशा./१३३ दिनांक 15 अक्टूबर, 2018। प्रपत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई गृह पत्रिका 'हिंदी गौरव' के द्वितीय अंक, जून-2018' की एक प्रति हमें प्राप्त हुई। आपके कार्यालय द्वारा वर्ष भर में आयोजित कार्यक्रमों के आयोजन की झलकियां, सुंदर फोटो सहित इस पत्रिका को चार चांद लगाती हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उच्च कोटि के हैं। इस कार्य के लिए आपके संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

पत्रिका प्रेषण हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।

जगमोहन भारद्वाज, तकनीकी अधिकारी 'सी'
हिम तथा अवधाव अध्ययन संस्थान, चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय पत्र संख्या 1(17)/2001 क्षे.पा.क./ चंडी.प्रशा. /१४८ दिनांक 17.10.2018 के तहत अद्‌योहस्ताक्षरी द्वारा 'हिंदी गौरव' के द्वितीय अंक के प्रकाशन का गहनता से अवलोकन किया गया। अवलोकन के उपरांत अद्‌योहस्ताक्षरी द्वारा यह पाया गया कि उक्त अंक में वर्तमान जीवन के लगभग सभी पहलुओं को छूने का प्रयास किया गया है और समाज को शिक्षित एवं उच्चतर स्तर पर लाने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस बात की कोशिश की गई है कि महिला सशक्तिकरण एवं मानव जीवन को कैसे बनाया जाए। उक्त अंक में अधिकांश गद्य एवं पद्य विद्यमान हैं जिसके अध्ययन उपरांत यदि मानव इसे अपने वास्तविक जीवन में उतारने का प्रयास करे तो हम अपने जीवन को बेहतर स्तर पर पहुंचा सकते हैं। निश्चित रूप से मैं, अद्‌योहस्ताक्षरी, इस अंक में प्रभावी बने सभी लेखक, लेखिका, कवि एवं कवियत्रियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अथक प्रयास एवं प्रतिभाशाली कलमरूपी हथियार ने सभी पाठकों का हृदय छूने का सफल प्रयास किया है।

उपरोक्त कथन के अतिरिक्त हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अद्‌योहस्ताक्षरी के कुछ विचार निम्नलिखित हैं एवं यदि इन बिंदुओं का वास्तविक रूप में अमल में लाया जाए तो हिंदी को आगे बढ़ाने में मदद मिल सकती है:-

(क) पचास के दशक में गठित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का पुनर्गठन किया जाए। साथ ही हिंदी शब्दकोश में संस्कृत शब्दों की बहुलता को हटाने की नितांत आवश्यकता है ताकि हिंदी का विकास संभव हो।

(ख) शब्दों के मामले में कभी भी भाषा के प्रचलित शब्दों को स्वीकारने की नीति होनी चाहिए। एचएम ऑक्सफोर्ड शब्दकोश से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं, जो प्रतिवर्ष अपने भंडार में आम प्रचालन के कई शब्दों को जोड़ता रहता है।

(ग) सरकार पत्रकारिता जगत से भी बहुत कुछ सीख सकती है, जहाँ अप्रचलित एवं कठिन शब्दों का शायद ही प्रयोग किया जाता है।

(घ) मैं इस बात पर भी जोर देना चाहूंगा कि सरकार को उच्चतम न्यायालय से परामर्श करके देश की अदालतों में हिंदी में जिरह करने एवं फैसला लिखने की भाषा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

कमांडेंट/केऔसुब इकाई, पंहसिस, चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'हिंदी गौरव' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी सामग्री सूचनाप्रद व उपयोगी है। कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है। आशा है कि यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी और अभिव्यक्ति का सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

संगीता वशिष्ठ, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं
तत्कालीन सचिव, नराकास, चंडीगढ़

राजभाषा पत्रिका हिंदी गौरव का द्वितीय संस्करण काफी ज्ञानवर्धक एवं रोचक है इस पत्रिका की 'शाकाहारी बनो' 'वायरस : कंप्यूटर का दुश्मन' बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगी। इस पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, राँची की तरफ से पत्रिका से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

भास्कर शील, सहायक पासपोर्ट अधिकारी
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, राँची

mPassport Police App जागरुकता प्रशिक्षण सत्र की झलकियाँ

कार्यालय द्वारा आयोजित mPassport Police App जागरुकता प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ

कार्यशाला के दौरान श्री सतेंद्र कुमार गुप्ता, उप महानिरीक्षक (सी.आई.डी.) हरियाणा पुलिस का स्वागत करते हुए श्री अमित कुमार रावत, उप पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ

कार्यशाला के दौरान उपस्थित पुलिस एवं कार्यालय के कार्मिकगण

पावर प्वाइंट प्रस्तुति देती हुई श्रीमती हरमीत कौर, क्लस्टर हेड, टी.सी.एस.

कार्यशाला के दौरान सवाल-जवाब सत्र में अपनी बात रखते हुए पुलिस अधिकारी

कार्यालय में आयोजित टेबल टेनिस प्रतियोगिता की झलकियाँ

क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए खिलाड़ी

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, चण्डीगढ़ की विविध गतिविधियाँ

नराकास द्वारा आयोजित राजभाषा अधिकारियों के लिए कार्यशाला में श्री अमित कुमार रावत उप पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ़

नराकास द्वारा आयोजित राजभाष अधिकारियों के लिए कार्यशाला के समापन पर तत्कालीन अध्यक्ष, नराकास (का.-1) से प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री अमित कुमार रावत, उप पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ़

विदेश मंत्रालय, पंजाब सरकार, आई.सी.एस.आई एवं आई टी.एफ.टी. द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "ऑरिएंटेशन फॉर ओवरसीज अपरच्युनीटीज इन एंप्लायमेंट एण्ड एजुकेशन फॉर पंजाब यूथ" विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, पैनल चर्चा एवं एक्स्पो के अवसर पर उपस्थित श्री अमित कुमार रावत, उप पारपत्र अधिकारी, चण्डीगढ़ (सबसे दाएँ) एवं श्री निशौकांत सिंह, अवर सचिव (ओ.आई.ए.-1) विदेश मंत्रालय (मध्य में)

नाराकास (का.-1) चंडीगढ़ द्वारा आयकर भवन, चण्डीगढ़ में दिनांक 06.08.2019 को आयोजित पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते हुए श्री जितेंद्र कुमार, सहायक अधीक्षक

हिंदी पखवाड़ा 2018 की झलकियाँ

हिन्दी गौरव पत्रिका द्वितीय अंक का विमोचन के

चुप्पी (लघुकथा)

श्री कृष्णा जी पाण्डेय
क. हिंदी अनुवादक

मद्धम बहती पुरवाई भी मीरा के चेहरे के पसीने को सुखाने में नाकाम हो रही थी। वह कभी इस तरफ तो कभी उस तरफ बेचैन भरी नजरों से चहलकदमी कर रही थी। उसे वहाँ पहुँचे हुए पूरे 5 मिनट हो गए थे, और ये 5 मिनट उसे 5 युग जैसे लग रहे थे।

'आइए!' मीरा ने उसे देखते ही कहा। झट से सर पर पल्लू रख चरण स्पर्श किया। उसने मीरा को बस एक नजर देख कर झट से नजर फेर ली, पर कोई जवाब नहीं दिया।

मीरा को एकबारगी कुछ सूझा ही नहीं। उसे अपने पुराने दिन याद आने लगे। न उसकी चिट्ठी का कोई जवाब आता, न ही ईमेल-व्हाट्सएप्प का। हाँ कभी-कभी फोन जरूर उठा लेता था पर केवल सुनने के लिए, बोलता कुछ भी नहीं था। वह सोचने लगी "भला सालों-साल बाद मिलने के बाद भी कोई इतना निष्ठुर हो सकता है, यदि हाँ तो कैसे और क्यों? और यह भी कि दोनों प्राणियों के बीच सालों से गहरी होती जा रही खाई और दूरी को पाटने की पहल भी तो उसने ही की थी। यहाँ मिलने की योजना भी तो उसी ने बनाई थी।

इधर वह कुल्ला करने, हाथ धोने के बहाने वाश बेसिन की तरफ बढ़ चुका था।

मीरा के मन-मस्तिष्क में कई विचार उमड़ने-घुमड़ने लगे। वह खिड़की के बाहर चिड़ियों के शोर के बीच दूर बैठे तोते के जोड़े को निहारने लगी।

कुछ देर बाद वापस लौटा। आकर मीरा के ठीक सामने वाली कुर्सी पर हाथ रखते हुए बैठते-बैठते पूछा "क्या खाने की..."।

यह पूछते समय उसकी रौबादार आवाज भर्राई हुई थी और इसी बीच उसका हाथ मीरा के हाथ से छू भर गया था। खन्न से खनकी हरी चूड़ियाँ।

केवल एक छुवन की गुदगुदी से करंट खाने वाली मीरा उसे बस एकटक देखे जा रही थी। वह सोचने लगी "आह! मेरी केवल एक जिद्द ने न जाने कितने चैत्र-सावन-फाल्गुन बर्बाद किए मेरे।

एक ओर बिल्कुल शांत से रेस्तरां में मौन चहलकदमी करती बाहर जा रही थी तो दूसरी ओर आँख का कोना-कोना भीगने को व्याकुल।

"रूठ जाना ए प्रिये, फिर मान जाने के लिए"

★★★★★

कलाकृति: किरन कुमारी

नराकास (का.-1), चंडीगढ़ की द्वितीय छमाही बैठक में तत्कालीन प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष नराकास (का.-1), चंडीगढ़ का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़

कार्यालय में आयोजित टेबल टेनिस प्रतियोगिता के विजेता, उप विजेता, अन्य खिलाड़ी पुरस्कार ग्रहण करने के बाद क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी, चंडीगढ़ के साथ

jkcbschd@gmail.com www.cbschandigarh.com
CHANDIGARH BUSINESS SYSTEM
◆ Stationery ◆ Computer Supplies
Bay Shop No. 12, Sector 27-D, Chandigarh - 160 019
Phone : 0172-5045296, Mobile : 9041366633, 9878166633

सेक्टर 7-ए, चंडीगढ़ स्थित पार्क में स्थापित कलाकृतियाँ

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय परिसर, चंडीगढ़

SABI GRAPHICS 9368091371